CRPF

कांस्टेबल

LATEST EDITION

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

2023

ट्रेड्समैन & टेक्निकल

HANDWRITTEN NOTES

भाग -1 सामान्य जागरूकता (GK)

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

CRPF

कांस्टेबल

ट्रेड्समैन & टेक्निकल

भाग –1

सामान्य जागरूकता (GK)

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**CRPF Constable (Tradesmen & Technical)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल (CRPF)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**CRPF Constable (Tradesmen & Technical)**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें* **/**

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp - https://wa.link/f3uxse

Online Order - https://bit.ly/3MicWlh

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम (2023)

प्राचीन भारत का इतिहास		
क्र.सं.	अध्याय	पेज
1.	सिन्धु घाटी सभ्यता	1
2.	वैदिक सभ्यता	4
3.	बौद्ध धर्म, जैन धर्म एवं शैव धर्म	9
4.	महाजनपद	15
5.	मौर्य एवं मौर्योत्तर काल	19
6.	गुप्त एवं गुप्तोतर काल	24
7.	भारत के प्रमुख राजवंश	28
मध्यकालीन भारत		
1.	अरबों का सिन्ध पर आक्रमण	43
2.	दिल्ली सल्तनत	45
3.	विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य	56
4.	मुग़ल वंश	58
आधुनिक भारत का इतिहास		
1.	यूरोपीय कम्पनियों का आगमन	68
2.	मराठा साम्राज्य	74
3.	अंग्रेजों की राजनीतिक एवं प्रशासनिक नीतियाँ	77
4.	1857 की क्रांति से पूर्व के जन आंदोलन	85
5.	भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन	89
6.	स्वतंत्रता आन्दोलन में गांधी जी का योगदान	94
7.	क्रांतिकारी आंदोलन से आजादी तक	102
भारतीय कला एवं संस्कृति		
1.	भारतीय चित्रकला	106
2.	भारतीय नृत्य कलाएँ	107
3.	मुगलकालीन कला एवं वास्तु	110

भारत का भूगोल		
1.	सामान्य परिचय	114
2.	भौतिक विभाजन	116
3.	भारत की नदियाँ एवं झीलें	122
4.	भारत की जलवायु	129
5.	भारत में कृषि	131
6.	मृदा	138
7.	भारत की वनस्पतियां	148
8.	भारत के राष्ट्रीय उद्यान एवं अभयारण्य	144
9.	प्रमुख खनिज एवं ऊर्जा संसाधन	146
10.	उद्योग	149
11.	परिवहन तंत्र	154
12.	जनसँख्या	159
भारत का संविधान		
1.	ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	163
2.	संविधान सभा	167
3.	संविधान की विशेषताएं	169
4.	भारतीय संविधान के स्त्रोत	173
5.	भारतीय संविधान के भाग	174
6.	संघ एवं राज्य क्षेत्र	175
7.	भारतीय नागरिकता	176
8.	मौलिक अधिकार	177
9.	नीति निदेशक तत्व	180
10.	राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति	183
11.	प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद्	187
12.	भारतीय संसद (विधायिका)	194

13.	सर्वोच्च न्यायालय	201
14.	राज्य कार्यपालिका	203
15.	मुख्यमंत्री, राज्य महाधिवक्ता, राज्य विधानमंडल	205
16.	उच्च न्यायालय	212
17.	पंचायती राज व्यवस्था	215
18.	निर्वाचन आयोग	220
19.	केंद्रीय सूचना आयोग	221
20.	संघ लोक सेवा आयोग	225
21.	राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग	227
22.	लोकपाल	228
23.	नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक	230
24.	नीति आयोग	231
25.	राष्ट्रीय महिला आयोग	233
26.	संविधान संशोधन	238
	अर्थशास्त्र	
1.	राष्ट्रीय आय और उत्पाद	239
2.	मुद्रा एवं बैंकिंग	240
3.	वस्तु एवं सेवा कर	243
4.	बजट 2023-24	258
5.	केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाएँ	263
	• विविध	268

प्राचीन भारत का इतिहास

अध्याय – I

सिन्धु घाटी सभ्यता

- यह दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता थी।
- इस सभ्यता को सबसे पहले हड़प्पा सभ्यता नाम दिया गया।
- सबसे पहले 1921 में हड़प्पा नामक स्थल की खोज दयाराम साहनी द्वारा की गई थी।
- सिन्धु घाटी सभ्यता को अन्य नामों से भी जानतें हैं।
- सैंधव सभ्यता- जॉन मार्शल के द्वारा कहा गया
- सिन्धु सभ्यता - मार्टियर व्हीलर के द्वारा कहा गया।
- वृहत्तर सिन्धु सभ्यता – ए. आर-मुगल के द्वारा कहा।
- सरस्वती सभ्यता भी कहा गया।
- मेलूहा सभ्यता भी कहा गया।
- मेलूहा सिन्धु क्षेत्र का प्राचीन नाम था।
- कांस्यकालीन सभ्यता भी कहा गया।
- यह सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया सभ्यताओं के समकालीन थी।
- इस सभ्यता का सर्वाधिक फैलाव घग्घर हाकरा नदी के किनारे है। अतः इसे सिन्धु सरस्वती सभ्यता भी कहते हैं।
- 1902 में लॉर्ड कर्जन ने जॉन मार्शल को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का महानिदेशक बनाया।
- जॉन मार्शल को हड़प्पा व मोहनजोदड़ों की खुदाई का प्रभार सौंपा गया।
- 1921 में जॉन मार्शल के निर्देशन पर दयाराम साहनी ने हड़प्पा की खोज की।
- 1922 में राखलदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ों की खोज की।
- हड़प्पा नामक पुरास्थल सिन्धु घाटी सभ्यता से सम्बद्ध है।
- 20 सितम्बर 1924 को जॉन मार्शल ने द इलस्ट्रेटेड लन्दन न्यूज' के माध्यम से इस सभ्यता की खोज की घोषणा की।
- सिन्धुवासी बैल को शक्ति का प्रतीक मानते थे।
- सिन्धुवासी तांबा धातु का ज्यादा प्रयोग करते थे।
- मेहरगढ़ से से भारत में कृषि का प्राचीनतम साक्ष्य मिला है।
- सिन्धुवासी मिठास के लिए शहद का प्रयोग किया करते थे।

सिन्धु सभ्यता की प्रजातियाँ –

- प्रोटो-आस्ट्रेलायड - सबसे पहले आयी
- भूमध्यसागरीय - मोहनजोदड़ों की कुल जनसंख्या में सर्वाधिक
- मंगोलियन – मोहनजोदड़ों से प्राप्त पुजारी की मूर्ति इसी प्रजाति की है।
- अल्पाइन प्रजाति।

सिन्धु सभ्यता की तिथि

- कार्बन 14 (C^{14}) - 2500 से 1750 ई.पू.
- ह्विलेर - 2500-1700 ई.पू.
- मार्शल - 3250-2750 ई.पू.

इस सभ्यता का विस्तार

- इस सभ्यता का विस्तार पाकिस्तान और भारत में ही मिलता है।

पाकिस्तान में सिन्धु सभ्यता के स्थल

- डाबर कोट
- सुत्कांगेडोर
- सोत्काकोह
- बालाकोट

सुत्कांगेडोर- इस सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल है जो दाश्क नदी के किनारे अवस्थित है। इसकी खोज ऑरेल स्टाइन ने की थी।

- सुत्कांगेडोर को हड़प्पा के व्यापार का चौराहा भी कहते हैं।

भारत में सिन्धु सभ्यता के स्थल,

- **हरियाणा**- राखीगढ़ी, सिसवल कुणाल, बनावली, मितायल, बालू
- **पंजाब** – कोटलानिहंग खान चक्र 86 बाड़ा, संघोल, टेर माजरा
  रोपड़ (रूपनगर) - स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद खोजा गया पहला स्थल
- **कश्मीर** - माण्डा
  चिनाब नदी के किनारे
  सभ्यता का उत्तरी स्थल
- **राजस्थान** - कालीबंगा, बालाथल

तरखान वाला डेरा

- **उत्तर प्रदेश**- आलमगीरपुर
  सभ्यता का पूर्वी स्थल
  - माण्डी
  - बड़गाँव
  - हलास
  - सनौली
- **गुजरात**
  धौलावीरा, सुरकोटड़ा, देसलपुर रंगपुर, लोथल, रोजदिख्वी, तेलोद, नगवाड़ा, कुन्तासी, शिकारपुर, नागेश्वर, मेघम प्रभासपाटन भोगन्नार
- **महाराष्ट्र**- दैमाबाद
  सभ्यता की दक्षिणतम सीमा
  फैलाव- त्रिभुजाकार
  क्षेत्रफल- 1299600 वर्ग किलों मीटर

प्रमुख स्थल एवं विशेषताएँ

- **हड़प्पा**
  रावी नदी के किनारे पर स्थित इस स्थल की खोज दयाराम साहनी ने की थी। खोज - वर्ष 1921 में उत्खनन-
- 1921-24 व 1924-25 में दयाराम साहनी द्वारा।
- 1926-27 से 1933-34 तक माधव स्वरूप वत्स द्वारा
- 1946 में मार्टीयर ह्वीलर द्वारा
- इसे 'तोरण द्वार का नगर तथा 'अर्द्ध औद्योगिक नगर' कहा जाता है।
- पिगट ने हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों को इस सभ्यता की जुड़वा राजधानी कहा है। इन दोनों के बीच की दूरी 640 किलोमीटर है।
- 1826 में चार्ल्स मैसन ने यहाँ के एक टीले का उल्लेख किया, बाद में उसका नाम ह्वीलर ने MOUND-AB दिया।
- हड़प्पा के अन्य टीले का नाम MOUND-F है।
- हडप्पा सभ्यता की मुद्राएँ आयताकार थी।
- हड़प्पा से प्राप्त कब्रिस्तान को R-37 नाम दिया।
- भारत में चाँदी की उपलब्धता के प्राचीनतम साक्ष्य हड़प्पा सभ्यता से मिलते हैं।
- यहाँ से प्राप्त समाधि को HR नाम दिया
- हड़प्पा के अवशेषों में दुर्ग, रक्षा प्राचीन निवास गृह चबूतरा, अन्नागार तथा ताम्बे की मानव आकृति महत्त्वपूर्ण हैं।
- हड़प्पा सभ्यता को ऋग्वेद में हरियुपिया कहा जाता है।
- "सिन्धु का बाग" हड़प्पा सभ्यता के मोहनजोदड़ों के पुरास्थल को कहा गया है।
- हड़प्पा वासी 16 के गुणक का प्रयोग किया करते थे।
- कोटदीजी की खोज 1935 में घुरये ने की थी। और इसकी नियमित खुदाई 1953 ई. में फजल अहमद ने की थी।
- कोटदीजी सिन्धु नदी के किनारे स्थित था।

मोहनजोदड़ों

- सिन्धु नदी के तट पर मोहनजोदड़ों की खोज सन् 1922 में राखलदास बनर्जी ने की थी। उत्खनन - राखलदास बनर्जी (1922-27)
  - मार्शल
  - जे.एच. मैके
  - जे.एफ. डेल्स
- मोहनजोदड़ों का नगर कच्ची ईटों के चबूतरे पर निर्मित था।
- मोहनजोदड़ों सिन्धी भाषा का शब्द, अर्थ- मृतकों का टीला मोहनजोदड़ों को स्तूपों का शहर भी कहा जाता है।
- बताया जाता है कि यह शहर बाढ़ के कारण सात बार उजड़ा एवं बसा।
- यहाँ से यूनीकॉर्न प्रतीक वाले चाँदी के दो सिक्के मिले हैं।
- वस्त्र निर्माण का प्राचीन साक्ष्य यहाँ से मिलता है। कपास के प्रमाण - मेहरगढ़
- सुमेरियन नाव वाली मुहर यहाँ से मिली है।
- मोहनजोदड़ों की सबसे बड़ी इमारत संरचना यहाँ से प्राप्त अन्नागार है। (राजकीय भण्डारागार)
- यहाँ से एक 20 खम्भों वाला सभा भवन मिला है। मैके ने इसे 'बाजार' कहा है।
- बहुमंजिली इमारतों के साक्ष्य, पुरोहित आवास, पुरोहितों का विद्यालय, पुरोहित राजा की मूर्ति, कुम्भकारों की बस्ती के प्रमाण भी मोहनजोदड़ों से मिले हैं।
- मोहनजोदड़ों का शाब्दिक अर्थ मृतकों का टीला है।
- मूर्ति पूजा का आरम्भ पूर्व आर्य काल से माना जाता है।
- बड़ी संख्या में कुओं की प्राप्ति ।

- 8 कक्षों वाला विशाल स्नानागार भी यहीं से प्राप्त हुआ हैं ।
- पिग्गट ने हडप्पा एवं मोहनजोदड़ों को एक विस्तृत साम्राज्य की जुड़वाँ राजधानी कहा है ।

कालीबंगा-

- कालीबंगा की खोज अमलानन्द घोष द्वारा गंगानगर में की गयी थी ।
- सरस्वती नदी (वर्तमान घग्घर के तट पर)
- कालीबंगा वर्तमान में हनुमानगढ़ में है ।
- उत्खनन - बी.बी लाल, वी. के. थापड़ 1953 में कालीबंगा - काले रंग की चूड़ियाँ
- कालीबंगा - सैंधव सभ्यता की तीसरी राजधानी
- कालीबंगा से एक साथ दो फसलों की बुवाई तथा जालीदार जुताई के साक्ष्य मिले हैं ।
- कालीबंगा से प्राप्त दुर्ग दो भागों में बंटा हुआ- द्विभागीकरण है ।
- सड़कों को पक्का बनाने का प्रमाण कालीबंगा से प्राप्त हुआ है ।
- युग्म शवाधान का साक्ष्य शवों का अन्तिम संस्कार की तीनों विधियों के साक्ष्य यहाँ से प्राप्त हुए हैं ।
- मृण पट्टिका पर उत्कीर्ण सींगयुक्त देवता की मुहर कालीबंगन से प्राप्त हुई है ।
- भूकम्प आने के प्राचीनतम प्रमाण यहीं से प्राप्त हुए है।
- वृषभ की ताम्रमूर्ति भी कालीबंगा से प्राप्त हुई है।
- यहाँ से प्राप्त लेखयुक्त बर्तन से स्पष्ट होता है कि इस सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी।
- लेखन कला की प्रणाली विकसित करने वाली प्रथम प्राचीन सभ्यता सुमेरियन सभ्यता थी ।

चन्हूदड़ों -

- खोज एन. जी. मजूमदार
- उत्खनन मैके ने किया ।
- सिन्धु सभ्यता का यह औद्योगिक शहर था ।
- यहाँ मणिकारी, मुहर बनाने, भार-माप के बटखड़े बनाने का काम होता था।
- सिन्धु संस्कृति के बाद विकसित झूकर- झांगर संस्कृति के अवशेष यहाँ से ही मिले हैं ।

लोथल

- खोज एस. आर. राव (रंग नाथ राव)1954 में की थी
  - लघु हड़प्पा
  - लघु मोहनजोदड़ों की संज्ञा दी गई है । और लोथल के पूर्वी भाग में एक गोदीबाड़ा का साक्ष्य मिला है।
- बन्दरगाह या जल भण्डार या गोदीबाड़ा यहाँ की सबसे महत्त्वपूर्ण खोज है।
- लोथल का बन्दरगाह ही सिन्धु सभ्यता की सबसे बड़ी इमारती संरचना है।
- लोथल से वृत्ताकार या चतुर्भुजाकार आग्निवेदी पाई गई हैं ।
- लोथल का मिश्र एवं मेसोपोटामिया के साथ सीधा व्यापार होता था।
- भारत में उत्तरी काले पॉलिशकृत मृद्भाण्ड द्वितीय नगरीकरण के प्रारम्भ के प्रतीक माने जाते हैं ।
- लोथल भोगवा नदी के किनारे बसा है ।

धौलावीरा

- खोज जे.पी. जोशी द्वारा - (1967-68) में मनहर एवं मानसेहरा नदियों के बीच कादिर द्वीप पर की खोज की।
- धौलावीरा एक आयताकार नगर था । जो तीन भागों में विभक्त था।
- धौलावीरा से जल-प्रबंधन के साक्ष्य प्राप्त हुये हैं ।
- भारत के विशालतम सिन्धु सभ्यता स्थल धौलावीरा तथा राखीगढ़ी है।
- धौलावीरा से घोड़े की कलाकृतियों के अवशेष मिले हैं । सिन्धु सभ्यता का यह औद्योगिक शहर था ।

रोजदी

- रोजदी से हाथी के अवशेष मिले हैं ।
- यहाँ मणिकारी, मुहर बनाने, भार-माप के बटखड़े बनाने का काम होता था।
- सिन्धु संस्कृति के बाद विकसित झूकर- झांगर संस्कृति के अवशेष यहाँ से ही मिले।

सुरकोटड़ा

- सुरकोटड़ा से घोड़े की अस्थियों के साक्ष्य मिले हैं।
- मिट्टी से बनी घोड़े की आकृति- मोहनजोदड़ों
- घोड़े की हड्डियां- सुरकोटड़ा
- तीन मृणमूर्तियाँ – लोथल
- अंडाकार शव के अवशेष सुरकोटड़ा से मिले है ।

बनावली

- बनावली रंगोई नामक नदी के तट पर स्थित है ।
- यहाँ से मिट्टी का हल, बटखरा तथा बहुत सारे घरों में अग्निकुण्ड के साक्ष्य मिले।

रोपड़

- रोपड़ सतलज नदी के बायें तट पर स्थित था।
- आधुनिक नाम रूपनगर
- स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद सैंधव सभ्यता का उत्खनित स्थल (भारत का)
- खोज-बी.बी. लाल 1950
  उत्खनन- यज्ञ दत्त शर्मा 1953-56
- रोपड़ से एक ऐसा कब्रिस्तान मिला है जहाँ मनुष्य के साथ पालतू कुत्ता भी दफनाया गया है।

राखीगढ़ी

- भारत में स्थित सबसे बड़ा सिन्धु सभ्यता स्थल

मांडा - उ.प्र.

- 7 नवीनतम उत्खनित स्थल।
- टकसाल गृह का साक्ष्य मिला है।
  घोड़े की हड्डियों के साक्ष्य मिले हैं।

अल्लाहदीनो

- यह बिना सुरक्षा दीवार से घिरा हड़प्पा का एक गाँव है।

कुन्तासी

- भारत में प्राप्त विशालतम हड़प्पा कालीन बस्ती।

बालाकोट

- बालाकोट सीप की बनी चूड़ियों के निर्यात का प्रमुख बन्दरगाह था।
- सीप उद्योग समृद्ध अवस्था में था।
- बालाकोट से सेलखड़ी से बनी मुहरें मिली हैं।

सुतकांगेडोर

- सिन्धु सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल था।
- खोज ऑरेल स्टाइन ने 1927 में की थी।
- यह एक बन्दरगाह था जो समुन्द्री व्यापार के लिए काम आता था।

सिन्धु-सभ्यता के प्रमुख बन्दरगाह -

लोथल	-	साबरमती + भोगवा
प्रभासपाटन	-	हिरण्य नदी
मेघम	-	नर्मदा
भगतराव	-	किम
सुत्कांगेडोर	-	दाश्क
सुरकोटदा	-	शादी कौर

अध्याय - 2

वैदिक सभ्यता

- **वैदिक काल**
  वैदिक काल को दो भागों में बांटा गया है -
  1. ऋग्वैदिक काल [1500 - 1000 ई.पू.]
  2. उत्तरवैदिक काल [1000 - 600 ई.पू]
- वेदों की संख्या चार है
- ऋग्वेद
- यजुर्वेद
- सामवेद
- अथर्ववेद
  त्रयी नाम तीनों वेदों के लिए प्रयोग किया जाता है।
  आरम्भिक वैदिक साहित्य में सर्वाधिक बार वर्णित नदी सिन्धु है।

ऋग्वेद-

- आर्य जाति की प्राचीनतम रचना
- रचना पंजाब में
- इसमें 10 भाग (मंडल) हैं। 1028 सूक्त, 10580 श्लोक हैं।
- ऋग्वेद मन्त्रों का एक संकलन है जिन्हें यज्ञों के अवसर पर देवताओं की स्तुति के लिए गाया जाता है।
- होर्त- ऋग्वेद के मंत्र पढ़ने वाला
- ऋचा-ऋग्वेद के मंत्र
- ऋग्वेद का पहला और दसवाँ मंडल सबसे नवीनतम है (बाद में जोड़े गये)
- तीसरे मंडल में देवी सूक्त' मिलता है।
- इसमें गायत्री मंत्र का उल्लेख है जो सावित्री को समर्पित है।
- आर्यों की भाषा संस्कृत थी।
- आर्य शब्द श्रेष्ठ वंश को इंगित करता है।
- तीसरे मंडल की रचना विश्वामित्र ने की।
- सातवें मंडल में दशराज्ञ युद्ध का विवरण मिलता है। यह युद्ध परुषणी यह (रावी) नदी के तट पर सुदास एवं दस जनों के बीच लड़ा गया था। जिसमें सुदास विजय हुआ।
- ऋग्वेद में नौवाँ मंडल पूर्णरूप से सोम देवता को समर्पित है।
- पुरुष मेध प्रथा का उल्लेख शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ में मिलता है।
- ऋग्वेद में सात पुरोहितों का वर्णन मिलता है।
- ऋग्वेद में अयस धातु का उल्लेख मिलता है।

- सत्यमेवजयते मुण्डकोपनिषद से लिया गया है। इसी उपनिषद् में यज्ञ की तुलना टूटी नाव से की गयी है।
- गायत्री मंत्र सवितृ नामक देवता को संबोधित है जिसका संबंध ऋग्वेद से है।

दशराज्ञयुद्ध

- रावी नदी (परुषणी नदी) के तट पर लड़ा गया। त्रित्सु वंश व दस जन
- भरत वंश (त्रित्सु वंश) के सुदास ने विश्वामित्र को पुरोहित पद से हटाकर वशिष्ठ को नियुक्त कर दिया।
- विश्वामित्र ने दस राजाओं का संघ बना लिया (प्रतिशोध) युद्ध किया ।
- ऋग्वेद में 1028 सूक्त है।

↓

1017+ 11 (परिशिष्ट) 1028 सूक्त

सामवेद

- साम का मतलब संगीत या गान होता है।
- यज्ञों के अवसर पर गाये जाने वाले मन्त्रों का संग्रह
- संगीत का प्राचीनतम स्त्रोत: भारतीय संगीत का जनक सामवेद को मान जाता है।
- मंत्र सूर्य देवता को समर्पित
- **उद्गाता** - मन्त्रों को गाने वाले व्यक्ति को कहा जाता है।

यजुर्वेद

- यज्ञों के नियम एवं विधि विधानों का संकलन
- यह एक ऐसा वेद है जो [गद्य और पद्य दोनों में] है।
- अन्य तीनों वेद पद्य में है।
- इसे गति या कर्म का वेद भी कहा जाता है।
- अध्वर्यु- मंत्र पढ़ने वाले को अध्वर्यु कहते हैं।
- शून्य का उल्लेख मिलता है।
- इसमें बलिदान विधि का वर्णन है।
- यजुर्वेद में कैवर्त शब्द का उल्लेख मछुआरे के लिए हुआ है।

अथर्ववेद

- इसे ब्रह्मवेद या श्रेष्ठ वेद भी कहा जाता है।
- अथर्वा ऋषि द्वारा रचित ज्ञान ही अथर्ववेद है। इस वेद में कुल 731 मंत्र तथा लगभग 6000 पद्य है।
- अथर्ववेद कन्याओं के जन्म की निंदा करता है।
- इसमें जादू, टोने-टोटके, अंधविश्वास व चिकित्सा का उल्लेख मिलता है।
- इसमें सभा एवं समिति को प्रजापति की दो पुत्रियाँ कहा गया है।
- ईख का उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है।
- अथर्ववेद में सामूहिक वाद विवाद के स्थल को नरिष्ठा कहा गया है।

ब्राह्मण साहित्य

- ब्राह्मण ग्रन्थों की रचना संहिताओं की व्याख्या करने के लिए गद्य में लिखे गये हैं।
- ये मुख्यतः दार्शनिक ग्रन्थ है।

ऋग्वेद - ऐतरेय ब्राह्मण
कोषीतकी
यजुर्वेद- शतपथ ब्राह्मण
तेतरेय ब्राह्मण
सामवेद- पंचवीश ब्राह्मण
षडवीश ब्राह्मण
जैमिनीय ब्राह्मण
अथर्ववेद- गोपथ ब्राह्मण

आरण्यक साहित्य

- रहस्यात्मक एवं दार्शनिक रूप में वनों (जंगलों) में लिखे गये।

उपनिषद्

- भारतीय दार्शनिक विचारों का प्राचीनतम संग्रह है।
- भारतीय दर्शन का स्त्रोत अथवा पिता
- उपनिषदों की कुल संख्या 108
- सत्यमेव जयते मुण्डकोपनिषद से लिया गया है।
- मोक्ष प्राप्ति के साधन की चर्चा वैदिक साहित्य में उपनिषद् से की गई है।
- असतो मा सदगमय वाक्यांश बृहदारण्यकोपनिशद से लिया गया है।

वेदांग

वेदों को भली-भांति समझने के लिए छः वेदांगो की रचना की गई ।

1. शिक्षा
2. ज्योतिष
3. कल्प वेदों के शुद्ध उच्चारण में सहायक
4. व्याकरण
5. निरूक्त
6. छन्द

पुराण

- ऋषि लोमहर्ष एवं इनके पुत्र उग्रश्रवा ने संकलित किया।
- इनकी संख्या 18 है।
- मत्स्य पुराण - सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक
- विष्णु पुराण – मौर्य वंश का उल्लेख

- सिकन्दर ने दो नगरों की स्थापना की थी--पहला नगर "निकैया' अर्थात् "विजय नगर' विजय प्राप्त करने के उपलक्ष्य में तथा दूसरा नगर "बुकाफेला' अपने प्रिय घोड़े के नाम पर स्थापित किया।
- सिकन्दर स्थल-मार्ग द्वारा 325 ई. पू. में भारत से लौटा।
- सिकन्दर ने विजित भारतीय प्रदेशों को सेनापति फिलिप को सौंपकर अपने देश की ओर लौट गया। नियारकस की अध्यक्षता में सेना का एक भाग जलमार्ग से स्वदेश की ओर रवाना हुआ था। सेल्यूकस निकेटर, सिकन्दर का सेनापति था।
- सिकन्दर की मृत्यु 323 ई. पू. में बेबीलोन में 33 वर्ष की आयु में हुई थी।
- सिकन्दर ने समुद्रतट पर अलेक्जैंड्रिया नामक नगर बसाया था।
- सिकन्दर ने हखमनी वंश को नष्ट कर दिया था।

भारतीयों ने यूनानियों से 'क्षत्रप प्रणाली' और "मुद्रा निर्माण" की कला को ग्रहण किया। भारत में गांधार शैली की कला यूनानी प्रभाव का परिणाम है।

अध्याय – 5

मौर्य एवं मौर्योत्तर काल

राजनीतिक इतिहास

- मौर्य वंश की स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य ने की थी। चन्द्र गुप्त का जन्म 345 ई.पू. हुआ था।
- शासन काल चतुर्थ शताब्दी ई.पू. से द्वितीय शताब्दी ई.पू. तक (321-185 ई.पू)
- स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा आचार्य चाणक्य (विष्णुगुप्त) के सहयोग से। (मगध में) की।
- मौर्य शासन से पहले मगध पर नंद वंश के शासक धनानन्द का शासन था।
- मौर्य राजवंश ने लगभग 137 वर्ष तक भारत में राज किया।
- राजधानी पाटलिपुत्र (पटना)
- साम्राज्य 52 लाख वर्ग किलोमीटर तक फैला हुआ था।

आचार्य चाणक्य

- जन्म तक्षशिला में (आचार्य)
- अन्य नाम विष्णुगुप्त, कौटिल्य
- चन्द्रगुप्त का प्रधानमंत्री तथा प्रधान पुरोहित आचार्य चाणक्य थे।
- पुराणों में चाणक्य को "द्विजर्षभ" कहा गया है जिसका मतलब है श्रेष्ठ ब्राह्मण
- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के बाद भी बिन्दुसार के समय भी प्रधानमंत्री बना रहा (कुछ समय के लिए)
- चाणक्य तक्षशिला विश्वविद्यालय में आचार्य रहे थे।
- इन्होंने अर्थशास्त्र नामक पुस्तक की रचना की।
- अर्थशास्त्र मौर्यकालीन साम्राज्य की राजव्यवस्था एवं शासन प्रणाली पर प्रकाश डालता है।
- अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण तथा 180 प्रकरण हैं।

चन्द्रगुप्त मौर्य (321 – 298 ई.पू.)

- चन्द्रगुप्त मौर्य 321 ई.पू. धनानन्द को हरा कर मगध का शासक बना।
- इसने सिकन्दर के उत्तराधिकारी सेल्यूकस को भी हराया था।
- सेल्यूकस की पुत्री हेलन का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ हुआ।
- उपाधियाँ - पाटलिपुत्रक (पालिब्रोथस)

- भारत का मुक्तिदाता
- प्रथम भारतीय साम्राज्य का संस्थापक

मेगस्थनीज

- मेगस्थनीज सेल्यूकस 'निकेटर' का राजदूत था।
- मेगस्थनीज चन्द्रगुप्त के शासन काल में पाटलिपुत्र में कई वर्षों तक रुका।
- इसने 'इंडिका' नामक पुस्तक की रचना की जिससे मौर्यकालीन शासन व्यवस्था की जानकारी मिलती है।
- मेगस्थनीज भारत आने वाला प्रथम राजदूत था।
- जस्टिन-चन्द्रगुप्त की सेना को डाकुओं का गिरोह कहते हैं।
- यूनानियों ने चन्द्रगुप्त को सेंड्रोकोट्स नाम दिया।
- चन्द्रगुप्त जैन धर्म का अनुयायी था।
- चन्द्रगुप्त के संरक्षण में प्रथम जैन संगीति पाटलिपुत्र में हुई थी।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपना शासन अपने पुत्र बिन्दुसार को सौंप दिया था।
- फिर वह अपने गुरु भद्रबाहु के साथ श्रवणबेलगोला (मैसूर) चला गया।
- वहां पर उसने संलेखना विधि (अन्न-जल त्याग) द्वारा मृत्यु (297/298 ई.पू.) को प्राप्त किया।
- चन्द्रगुप्त मौर्य के लिए वृषल उपनाम मुद्राराक्षस नामक ग्रन्थ में मिलता है।
- 'वृषल' शब्द का अर्थ है निम्न कुल। चन्द्रगुप्त मौर्य को ब्राह्मण साहित्य में शुद्र कुल, बौद्ध एवं जैन ग्रन्थ में क्षत्रिय कुल तथा रोमिला थापर ने वैश्य कुल में उत्पन्न माना है।
- चन्द्रगुप्त मौर्य के लिए वृषल उपनाम मुद्राराक्षस नामक ग्रंथ में मिलता है।
- मेगस्थनीज ने कहा की भारतीय लिखने की कला को नही जानते है।
- अशोक के समय में मौर्य साम्राज्य में प्रान्तों की संख्या 5 थी। प्रान्तों को चक्र कहा जाता था। प्रान्तों को आहार या विषय में बांटा गया था।
- अर्थशास्त्र में शीर्षस्थ अधिकारी के रूप में तीर्थ का उल्लेख मिलता है। जिसे महापात्र भी कहा जाता था। इनकी संख्या 18 थी। अर्थशास्त्र में चर जासूस को कहा गया है।

बिन्दुसार 298 – 273 ई.पू.

- अन्य नाम अमित्रघात था।
- इसने अपने साम्राज्य को सुरक्षित रखने में सफलता प्राप्त की।
- सीरिया के शासक एंटियोकस ने डायमेकस को बिन्दुसार के दरबार में भेजा था।
- डायमेकस को मेगस्थनीज का उत्तराधिकारी माना जाता है।
- बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।
- जैन ग्रन्थों में बिन्दुसार को सिंहसेन कहा गया है।

अशोक महान

- अशोक अपने पिता बिन्दुसार के शासन काल में प्रान्तीय प्रशासक (उज्जयनी) के पद पर था।
- प्राचीन भारतीय इतिहास का सर्वाधिक प्रसिद्ध सम्राट सम्राट अशोक था।
- सर्वाधिक अभिलेखीय प्रमाण इसी के काल के मिलते हैं।
- अभिलेखों में अशोक का नाम देवानाम प्रियदर्शी लिखा मिलता है।
- सर्वप्रथम मास्की लेख में अशोक का नाम पढ़ा गया।
- अशोक महान ने श्रीनगर की स्थापना की।
- अशोक अपने प्रारम्भिक जीवन में भगवान शिव का उपासक था।
- पुराणों में अशोक को अशोक वर्धन कहा गया है।

कलिंग युद्ध

- मगध के पड़ोस में कलिंग शक्तिशाली राज्य था।
- अपने राज्याभिषेक के आठवें वर्ष में 261 ई.पू. में अशोक ने कलिंग के साथ युद्ध किया था।
- यह सूचना अशोक के 13वें बड़े शिलालेख से मिलती है।
- कलिंग विजय के नरसंहार से सम्राट अशोक ने कभी युद्ध न करने का फैसला किया।
- अशोक महान ने अभिलेखों के माध्यम से राज्य की प्रजा को अपने संदेश पहुँचाये।
- अभिलेखों की भाषा
- प्राकृत (अधिकांश इसी भाषा में।)
- यूनानी
- अरामाइक
- अशोक के अभिलेख को सर्वप्रथम 1837 में जेम्स प्रिंसेप ने पढ़ा था।

चोल प्रशासन

- **चोल कालीन प्रशासन एक केंद्रीय प्रशासन था। इसका निम्न रूप में विभाजन था:-**
  राष्ट्र → मंडलम (प्रांत) → वलनाडु → नाडु → कोटटम → गाँव
- केंद्रीय प्रशासन का प्रमुख राजा होता था तथा साथ ही साथ शासन का सर्वोच्च अधिकारी भी। उसका पद वंशानुगत था और ज्येष्ठ पुत्र को ही राजा का उत्तराधिकारी माना जाता था।
- राजा चक्रवर्तिगाल, त्रिकाल, सम्राट जैसी उच्च सम्मानपरक उपाधियाँ धारण करते थे। मंदिरों में सम्राट की प्रतिमा स्थापित की जाती थी तथा मृत्यु के बाद दैव रूप में पूजा की जाती थी जैसे - तंजौर के मंदिर में सुंदरचोल (परांतक द्वितीय) तथा राजेन्द्र चोल की प्रतिमाएँ स्थापित की गयी थी।
- राजा की सहायता के लिए दरबारी अधिकारियों की सभा थी जो उदनकुटटन कहलाती थी। रायलसम विभाग आज के आधुनिक डाक विभाग की तरह कार्य करते थे।
- चोल साम्राज्य मंडलो या प्रांतो में विभाजित था। जिनकी संख्या 8 या 9 थी। मंडलम, वलनाडुओं और नाडुओं में बँटे होते थे ।
- वलवाडु प्रशासनिक इकाई थी। नाडु लगान-वसूली से संबंधित थी। नाडु का प्रशासन नाडु - वगाय नामक अधिकारी देखते थे ।
- सम्पूर्ण चोल साम्राज्य 6 प्रान्तों में विभक्त था।
- प्रान्त को **मंडलम्** कहा जाता था। मंडलम् **कोट्टम्** में, कोट्टम् **नाडु** में एवं नाडु कई **कुर्रमों** में विभक्त था।
- नाडु की स्थानीय सभा को **नाट्टूर** एवं नगर की स्थानीय सभा को **नगरतार** कहा जाता था।
- **स्थानीय स्वशासन** चोल प्रशासन की मुख्य विशेषता थी।
- **उर** सर्वसाधारण लोगों की समिति थी,
- **सभा** या महासभा मूलतः अग्रहारों और ब्राह्मण बस्तियों की सभा थी, जिसके सदस्यों को **पेरुमक्कल** कहा जाता था।
- व्यापारियों की सभा को **नगराम** कहते थे।
- चोल सेना का सबसे संगठित अंग था – **पदाति सेना**।
- बहुत बड़ा गाँव, जो एक इकाई के रूप में शासित किया जाता था, **तनियर** कहलाता था।
- चोल काल (chola period) में सड़कों की देखभाल **बगान समिति** करती थी।

राजस्व प्रशासन

- चोल राज्य की **आय का प्रमुख साधन भूमिकर** था । भूमिकर ग्राम-सभाएं एकत्र करके सरकारी कोष में जमा करती थी। कर । / 2 से । / 4 भाग तक होता था। इसे **कड़माप या कड़ीमै (भू-राजस्व)** कहते थे। चोल काल में भूमि की ।2 से भी अधिक किस्मों का उल्लेख मिलता है ।
- प्रत्येक ग्राम तथा नगर में रहने के स्थान, मंदिर, तालाब, कारीगरों के आवास, श्मशान आदि सभी प्रकार के करों से मुक्त थे।
- पिंडारी (ग्राम्यदेवी) के लिए, बकरों की बलि का स्थान, कुंभकार, स्वर्णकार, लौहकार, रजक, बढ़ई आदि के निवास स्थानों को भी कर मुक्त रखा गया था ।
- चोलों के **स्वर्ण सिक्के कलंजु या पोंज** कहे जाते थे।
- अकाल आदि दैवीय आपदाओं के समय भूमिकर माफ कर दिया जाता था।
- दक्षिण भारत में तालाब ही सिंचाई के प्रमुख साधन थे। जिनके रखरखाब की जिम्मेदारी ग्राम सभाओं की होती थी, **तालाबों की मरम्मत के लिए एरिआरम नामक कर** भी वसूल किया जाता था।
- लोगों के कर न देने पर दण्ड की व्यवस्था थी। जैसे - पानी में डुबो देने और धूप में खड़ा कर देने का भी उल्लेख मिला है।

सैन्य प्रशासन

- अश्व, गज, रथ एवं पैदल सैनिकों के साथ एक अत्यन्त शक्तिशाली नौ सेना थी। इसी नौ सेना की सहायता से उन्होंने श्रीविजय, सिंहल, मालदीप आदि द्वीपों की विजय की थी। सैनिकों को वेतन में राजस्व का एक भाग या भूमि देने की प्रथा थी।
- लेखों में बड़पेई (पैदल सैनिक), बिल्लिगल (धनुर्धारी सैनिक), कुडीरेइच्चेवगर (अश्वारोही सैनिक), आनैयाटक कुजीरमललर (गजसेना) आदि का उल्लेख मिला है।

अध्याय – 3

विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य

- इसकी स्थापना 1347 ईस्वी में तुर्की गवर्नर अलाउद्दीन हसन बहमन द्वारा हुई।
- जिसे कि हसन् गंगू के नाम से भी जाना जाता है।

बहमनी राज्य

- वर्ष 1347 में हसन् अब्दुल मुजफ्फर अलउद्दीन बहमनशाह के नाम से राजा बना और उसने बहमनी राजवंश की स्थापना की।
- यह राजवंश लगभग 175 वर्ष तक चला और इसमें 18 शासक हुए।
- बहमनी राज्य के सर्वाधिक विशिष्ट व्यक्तित्व महमूद गवन थे, जो दो दशक से अधिक समय के लिए अमीर उल अलमारा के प्रधान राज्यमंत्री रहे।

केंद्रीय प्रशासन

- वकील-उल -सल्तनत- यह प्रधानमंत्री था । सुल्तान के सभी आदेश उसके द्वारा ही पारित होते थे।
- अमीर-ए-जुमला- यह वित्तमंत्री था।
- वजीर-ए-अशरफ- यह विदेश मंत्री था।
- वजीर-ए-कुल- यह सभी मंत्रियों के कार्यों का निरीक्षण करता था
- पेशवा- यह वकील के साथ संयुक्त रूप से कार्य करता था।
- नाजिर- यह अर्थ विभाग से संलग्न था तथा उपमंत्री की भांति कार्य करता था।
- कोतवाल - यह पुलिस विभाग का अध्यक्ष था।
- सद-ए-जाहर (राष्ट्र-ए-जहाँ)- यह सुल्तान के पश्चात् राज्य का मुख्य न्यायाधीश था तथा धार्मिक कार्यों तथा राज्य को दिये जाने वाले दान की भी व्यवस्था करता था ।

प्रान्तीय शासन

- प्रान्तीय शासन व्यवस्था को सुव्यवस्थित करने के लिए अपने राज्य को चार सूबों में विभाजित किया।
- गुलबर्गा, दौलताबाद, बरार और बीदर ।
- प्रान्तीय गवर्नर अपने-अपने प्रान्त में सर्वोच्च होता था।
- मुहम्मद शाह तृतीय के समय में बहमनी साम्राज्य का सर्वाधिक विस्तार हुआ।
- उसके प्रधानमंत्री महमूद गवन ने प्रशासनिक सुधारों के अन्तर्गत प्रान्तों को आठ सूबों – बरार को गाविल व माहूर में, गुलबर्गा को बीजापुर व गुलबर्गा में, दौलताबाद को दौलताबाद व जुन्नार में तथा बीदर को राजामुंदी और वारंगल में विभाजित किया।

स्थापत्य कला

- गुलबर्गा तथा बीदर के राजमहल, गेसुद राज की कब्र, चार विशाल दरवाजों वाला फिरोज शाह का महल, मुहम्मद आदिल शाह का मकबरा, जामा मस्जिद, बीजापुर की गोल गुम्बद तथा बीजापुर सुल्तानों के मकबरे स्थापत्य कला के उत्कृष्ट नमूने हैं ।
- गोल गुम्बद को विश्व के गुम्बदों में श्रेष्ठ माना जाता है।
- गोलकुंडा तथा दौलताबाद के किले भी इसी श्रेणी में आते हैं।

विजयनगर साम्राज

स्थापना

- विजयनगर मध्य युग में दक्षिण भारत का एक हिन्दू राज्य था।
- विजयनगर साम्राज्य की राजधानी तुंगभद्रा नदी के किनारे हम्पी थी।
- विजयनगर साम्राज्य की स्थापना 1336 ई. में हरिहर एवं बुक्का नामक दो भाइयों ने की।
- माधवारण्य इनके गुरु थे।
- हरिहर और बुक्का वारंगल के काकतीय राजा रुद्रप्रताप देव के सामंत थे ।

विजयनगर के राजवंश

1. संगम वंश - 1336-1485 ई.
2. सालुव वंश - 1485-1505 ई.
3. तुलुव वंश - 1505-1570 ई.
4. अरविडु वंश - 1570-1650 ई.

संगम वंश (1336-1485 ई.)

- इस वंश के संस्थापक हरिहर और बुक्का थे । ये संगम नामक व्यक्ति के पुत्र थे ।

हरिहर (1336-1356 ई.)

- हरिहर प्रथम इस संगम वंश का प्रथम शासक था। अनेगोंडी इसकी राजधानी थी । इसने 1346 में होयसल और 1352-53 ई. में मदुरै जीत लिया।

- हरिहर प्रथम ने अनेगोंडी के स्थान पर विजयनगर को अपनी राजधानी बनाया।
- हरिहर प्रथम की 1336 ई. में मृत्यु हो गयी थी। उसके बाद उसका भाई राजगद्दी पर बैठा।

बुक्का (1356-1377 ई.)

- हरिहर के बाद उसका भाई बुक्का प्रथम राजा बना।
- 1374 ई.में इसने अपना दूत मंडल चीन भेजा।
- बुक्का प्रथम ने वेदमार्ग प्रतिष्ठापक की उपाधि धारण की।
- अभिलेखों में बुक्का प्रथम को विजयनगर के पूर्वी पश्चमी व् दक्षिणी सागरों का स्वामी कहा जाता था।
- प्रसिद्ध विजय विट्ठल मंदिर हम्पी में स्थित है।

हरिहर द्वितीय (1377-1406 ई.)

- हरिहर द्वितीय (1377-1404 ई.) ने राजव्यास की उपाधि धारण की।
- इसने बहमनी राज्य से बेलगाँव और गोवा जीत लिया। इसका मुख्यमंत्री सायण था।

देवराय प्रथम (1406-1422 ई.)

- इन्हें फिरोजशाह बहमन ने पराजित किया। इसे बहमनी सुल्तान के साथ अपनी लड़की का विवाह करना पड़ा तथा दहेज के रूप में दोआब क्षेत्र में स्थित बाकापुर भी सुल्तान को देना पड़ा, ताकि भविष्य में युद्ध की गुंजाइश न रहे।
- 1410 ई. में तुंगभद्रा पर बाँध बनवाकर अपने राजधानी के लिए जल निकलवाया।
- इसी के काल में इतावली यात्री निकोलोकोंटी ने विजयनगर की यात्रा की, यहाँ के सामाजिक जीवन, त्यौहारों का भी वर्णन अपने वृत्तान्त में किया है।
- इसके दरबार में हरविलास तथा तेलुगू कवि श्री नाथ थे।

देवराय द्वितीय (1422-1446 ई.)

- यह बुक्का का पुत्र था। इनके अभिलेख पुरे विजयनगर साम्राज्य में प्राप्त हुए हैं।
- इनके अभिलेखों से ज्ञात होता है कि इन्हें गजबेटकर अर्थात् हाथियों का शिकारी की उपाधि मिली।
- इनको इम्माडी देवराय या प्रौढ़ देवराय भी कहा जाता था।
- फारस के दूत अब्दुर्रज्जाक ने विजयनगर साम्राज्य का 1443 ई में भ्रमण किया।

मल्लिकार्जन (1446-1465 ई.)

- यह देवराय द्वितीय का उत्तराधिकारी एवं ज्येष्ठ पुत्र था।

विरू पाक्ष

- मल्लिकार्जुन के उत्तराधिकारी विरूपाक्ष द्वितीय एक अयोग्य शासक था।

सालव वंश (1485-1505 ई.)

- नरसिंह सालुव ने 1485 ई. विजयनगर में सालव वंश की स्थापना की। इसे प्रथम बलापहार कहा गया।
- 1505 ई में नरसा नायक के पुत्र वीर नरसिंह ने शासक की हत्या कर तुलुव वंश की स्थापना की।

तुलुव वंश (1505-1570 ई.)

वीर नरसिंह

- वीर नरसिंह के इस तरह राज गद्दी पर अधिकार करने को विजय नगर साम्राज्य के इतिहास में द्वितीय बलापहार की संज्ञा दी गई।

कृष्ण देवराय (1509-1529 ई.)

- कृष्ण देवराय न केवल तुलुव वंश का अपितु पूरे विजयनगर का सर्वश्रेष्ठ शासक था। इसने अपनी विजयों को सांस्कृतिक उपलब्धियों से विजय नगर सम्राज्य को अपने समय में सर्वश्रेष्ठ बना दिया।
- विजयनगर के शासक कृष्ण देवराय ने गोलकुंडा का युद्ध कुली कुतुबशाह के साथ हुआ था।
- बाबर ने अपनी पुस्तक बाबरनामा में कृष्ण देवराय की प्रशंसा की है।
- तालीकोटा (राक्षसी-तंगड़ी) का युद्ध 1565 में हुआ था।
- **विजयें:-** गजपति शासकों के विरुद्ध विजय:- गजपतियों का शासन उड़ीसा में स्थापित था।

कृष्ण देवराय की उपाधियाँ

- **यवन राज्य स्थापनाचार्य-:** कृष्ण देवराय ने बहमनी शासक महमूद शाह को दक्षिण की लोमड़ी के नाम से प्रसिद्ध बीदर के चंगुल से मुक्त करवाया इसके उपलक्ष्य में उसने यवन राज्य स्थापनाचार्य की उपाधि धारण की।

- 1544 ई. में शेरशाह ने मारवाड़ के शासक मालदेव पर आक्रमण किया। इसमें उसे बड़ी मुश्किल से सफलता मिली। इस युद्ध में राजपूत सरदार 'जैता' और 'कुंपा' ने अफगान सेना के छक्के छुड़ा दिए।
- 1545 ई में शेरशाह ने कालिंजर के मजबूत किले का घेरा डाला, जो उस समय कीरत सिंह के अधिकार में था, परन्तु 22 मई 1545 को बारूद के ढ़ेर में विस्फोट के कारण उसकी मृत्यु हो गयी।
- भारतीय इतिहास में शेरशाह अपने कुशल शासन प्रबंध के लिए जाना जाता है।
- शेरशाह सूरी ने प्रसिद्ध ग्रैंड ट्रंक रोड (पेशावर से कलकत्ता) की मरम्मत, करवाकर व्यापार और आवागमन को सुगम बनाया।
- डाक – प्रथा की शुरुआत शेरशाह के द्वारा ही किया गया था।
- मलिक मुहम्मद जायसी शेरशाह के समकालीन थे।
- शेरशाह का मकबरा बिहार के सासाराम में स्थित है, जो मध्यकालीन कला का एक उत्कृष्ट नमूना है।
- दिल्ली में द्वितीय अफगान वंश का संस्थापक शेरशाह सूरी था।
- शेरशाह के शासन काल में भू-राजस्व की वसूली की निगरानी करने वाले अधिकारी को मुंसिफ अथवा आमिल कहते हैं।
- शेरशाह की मृत्यु के बाद भी सूर वंश का शासन 1555 ई. में हुमायूँ द्वारा पुनः दिल्ली की गद्दी प्राप्त करने तक कायम रहा।
- शेरशाह ने भूमि की माप के लिए 32 अंकवाडा सिकन्दरी गज एवं सन की डंडी का प्रयोग किया। इसने 178 ग्रेन चाँदी का रुपया व 380 ग्रेन ताम्बे के दाम चलाये।
- शेरशाह के समय पैदावार का लगभग 1/3 भाग सरकार लगान के रूप वसूल करती थी।
- कबुलियत तथा पट्टा प्रथा की शुरुआत शेरशाह ने की थी।

अकबर (1556 – 1605)

- हुमायूँ की मृत्यु के बाद उसके पुत्र अकबर का कलानौर नामक स्थान पर 14 फरवरी, 1556 को मात्र 13 वर्ष की आयु में राज्याभिषेक हुआ।
- अकबर का जन्म 15 अक्टूबर, 1542 को अमरकोट के राजा वीरमाल के प्रसिद्ध महल में हुआ था।
- अकबर ने बचपन से ही गजनी और लाहौर के सूबेदार के रूप में कार्य किया था।
- भारत का शासक बनने के बाद 1556 से 1560 तक अकबर बैरम खाँ के संरक्षण में रहा।
- अकबर ने बैरम खाँ को अपना वजीर नियुक्त कर खान-ए-खाना की उपाधि प्रदान की थी।
- 5 नवम्बर, 1556 को पानीपत के द्वितीय युद्ध में अकबर की सेना का मुकाबला अफगान शासक मुहम्मद आदिल शाह के योग्य सेनापति हैमू की सेना से हुआ, जिसमें हैमू की हार एवं मृत्यु हो गयी।
- 1560 से 1562 ई. तक दो वर्षों तक अकबर अपनी धाय माँ महम अनगा, उसके पुत्र आदम खाँ तथा उसके सम्बन्धियों के प्रभाव में रहा। इन दो वर्षों के शासनकाल को पेटीकोट सरकार की संज्ञा दी गयी है।
- अकबर ने दक्षिण भारत के राज्यों पर अपना आधिपत्य स्थापित किया था। खानदेश (1591), दौलताबाद(1599), अहमदनगर (1600) और असीरगढ़ (1601) मुग़ल शासन के अधीन किये गए।
- अकबर ने भारत में एक बड़े साम्राज्य की स्थापना की, परन्तु इससे ज्यादा वह अपनी धार्मिक सहिष्णुता के लिए विख्यात है।
- अकबर ने 1575 ई. में फतेहपुर सीकरी में इबादतखाना की स्थापना की।
- इस्लामी विद्वानों की अशिष्टता से दुखी होकर अकबर ने 1578 ई. में इबादतखाना में सभी धर्मों के विद्वानों को आमंत्रित करना शुरू किया।
- 1582 ई. में अकबर ने एक नवीन धर्म 'तौहीद-ए-इलाही' या 'दीन-ए-इलाही' की स्थापना की, जो वास्तव में विभिन्न धर्मों के अच्छे तत्वों का मिश्रण था।
- सिक्खों के चौथे गुरु रामदास ने अकबर द्वारा दी गयी 500 बीघा जमीन पर अमृतसर नगर की स्थापना की थी।
- अकबर ने सती प्रथा को रोकने का प्रयत्न किया, साथ ही विधवा विवाह को क़ानूनी मान्यता दी। अकबर ने लड़कों के विवाह की उम्र 16 वर्ष और लड़कियों के लिए 14 वर्ष निर्धारित की।

- काशी पण्डित इतिहासकार ने पानीपत की तीसरी लड़ाई को स्वयं देखा था।
- मोड़ी लिपिका प्रयोग मराठों के अभिलेखों में किया गया है।
- पतदाम 'नामक कर (Tax) विधवा पुनर्विवाह पर लिया जाता था।
- अव्वल, साधारण और निम्न शब्द भूमि के लिए प्रयुक्त होते थे।
- टण्डल तथा सरटण्डल अधिकारी नौसेना विभाग से संबंधित थे।
- वित्तीय संकट के समय वसूल किया जाने वाला कर कुर्जा-पट्टी यातस्ती पट्टी' था।
- मराठा सरदारों को दिया जाने वाला 'चौथ' आय का 66% भाग "मोकास" कहलाता था ।

अध्याय – 3
अंग्रेजों की राजनीतिक एवं प्रशासनिक नीतियाँ

बंगाल के गवर्नर / फोर्ट विलियम के गवर्नर गवर्नर, गवर्नर जनरल & वायसराय

गवर्नर जनरल:

ब्रिटिश भारत में 1773 ई. से 1857 ई. के बीच तेरह गवर्नर जनरल आए। इनके शासनकाल में निम्नांकित मुख्य घटनाएं एवं विकास हुए-:

वारेन हेस्टिंग (1772- 1785)

- दोहरी शासन प्रणाली (की समाप्ति) जो बंगाल के गवर्नर (राबर्ट क्लाइव द्वारा शुरू किया गया था)।
- प्रथम गवर्नर जनरल बंगाल का वारेन हेस्टिंग्स था ।
- 1773 ई. रेग्यूलैटिंग एक्ट ।
- 1774 ई. में रोहिल्ला युद्ध एवं अवध के नवाब द्वारा रूहेलखण्ड पर अधिकार।
- 1781 ई. का एक्ट (इसके द्वारा गवर्नर जनरल परिषद् एवं कलकत्ता सुप्रीम कोर्ट न्यायिक अधिकार क्षेत्र का निर्धारण किया गया।
- 1782 में सालबाई की संधि एवं (1775-82) में प्रथम मराठा युद्ध।
- 1784 ई. का पिट्स इंडिया एक्ट।
- द्वितीय मैसूर युद्ध (1780-84)
- सुरक्षा प्रकोष्ठ या घेरे की नीति का संबंध (वारेन हेस्टिंग्स एवं वेलेजली)
- 1785 ई. इंग्लैण्ड वापसी के बाद हाउस ऑफ लॉर्डस में महाभियोग का मुकदमा चलाया गया।
- 1784 ई. में सर विलियम जोंस एवं हेस्टिंग्स द्वारा एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाली स्थापना करना।
- गीता के अंग्रेजी अनुवादकार विलियम विलकिन्स चार्ल्स को वारेन हेस्टिंग ने आश्रय प्रदान किया था।
- वारेन हेस्टिंग के समय 1780 ई. में भारत का पहला समाचार पत्र द बंगाल गजट का प्रकासन जेम्स आगस्टस हिक्की ने किया था ।

- वारेन हेस्टिंग के काल में बोर्ड ऑफ़ रेवेन्यु की स्थापना हुई ।
- वारेन हेस्टिंग ने सम्पूर्ण लगान के हिसाब की देखभाल के लिए एक भारतीय अधिकारी राय रायन की नियुक्ति की इस पद को प्राप्त करने वाला पहला भारतीय दुर्लभराय का पुत्र राजा राजवल्लभ था ।

लॉर्ड कार्नवालिस –: 1786 -1793 (1805)

- 1790 -92 ई. में तृतीय मैसूर युद्ध हुआ।
- 1792 ई. में श्रीरंगपटनम की संधि
- 1793 ई. में बंगाल एवं बिहार में स्थायी कर व्यवस्था जमींदारी प्रथा की शुरुआत ।
- 1793 ई. में न्यायिक सुधार, ।
- विभिन्न स्तरों के कोर्ट की स्थापना ।
- कर प्रशासन को न्यायिक प्रशासन से अलग करना।
- सिविल सर्विस की शुरुआत।
- प्रशासन तथा शुद्धिकरण के लिए सुधार।
- स्थायी बंदोबस्त प्रणाली को इस्तमरारी, जमींदारी, माल गुजारी एवं बीसवेदारी आदि नाम से भी जाना जाता हैं।
- कॉर्नवालिस को भारत में नागरिक सेवा का जनक माना जाता हैं ।
- कार्नवालिस ने 1793 ई. में "कार्नवालिस कोड" का निर्माण किया जो शक्तियों के पृथक्कीकरण के सिद्धांत पर आधारित था ।
- स्थायी बंदोबस्त की योजना जॉन शोर ने बनाई थी । यह बंगाल , बिहार , उड़ीसा , बनारस , एवं मद्रास के उत्तरी जिलों में लागू लागू की गई थी। इसमें जमींदार भू-राजस्व की दर तय करने के लिए स्वतंत्र थे ।
- कार्नवालिस ने 1793 ई. में स्थायी बंदोबस्त की पद्धति लागू की , जिसके तहत् जमींदारों को अब भू-राजस्व का 8/9 भाग कम्पनी को तथा 1/9 भाग अपनी सेवाओं के लिए अपने पास रखना था ।

सर जॉन शोर (1793-98):-

- स्थायी बंदोबस्त (1993) को शुरू करने में इन्होंने 'राजस्व बोर्ड अध्यक्ष के रुप में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- जॉन शोर ने अहस्तक्षेप की नीति अपनाई । और अपनी नीति के कारण उसने अपने 5 वर्ष के कार्यकाल में किसी भी युद्ध में भाग नहीं लिया ।
- इसी के समय में चार्टर अधिनियम 1793 ई. पारित हुआ ।

लॉर्ड वेलेजली (1798-1805):-

- लॉर्ड वेलेजली 1798 से 1805 तक बंगाल का गवर्नर जनरल रहा। उसके कार्यकाल में अंतिम मैसूर युद्ध लड़ा गया।
- इस युद्ध के बाद मैसूर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन आ गया।
- लॉर्ड वेलेजली के काल में द्वितीय मराठा युद्ध लड़ा गया था जिसमें अंग्रेजों की विजय हुई। यह कंपनी राज के सबसे महत्वपूर्ण युद्धों में से एक था।
- वेलेजली सहायक संधि की शुरुआत की ।
- लॉर्ड वेलेजली की सहायक संधि को सर्वप्रथम मैसूर के राजा (1799), तंजौर के राजा (1799), अवध के नवाब (1801), पेशवा (1801), बरार के राजा (1803), सिंधिया (1804), जोधपुर , जयपुर, बूंदी और भरतपुर के राजा थे।
- उसने 10 जुलाई 1800 को फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की।
- उसने 1799 में सेंसरशिप एक्ट पारित किए जिसका उद्देश्य फ्रांस की मीडिया पर नियंत्रण करना था।
- लॉर्ड वेलेजली स्वयं को बंगाल का शेर कहता था।
- लॉर्ड वेलेजली ने ईष्ट इंडिया कम्पनी को व्यापारिक कम्पनी के स्थान पर एक शक्तिशाली राजनैतिक शक्ति के रूप में स्थापित किया ।
- वेलेजली के समय में ही चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध हुआ था, जिसमें टीपू सुल्तान 1799 ई. में मारा गया ।
- वेलेजली ने कलकत्ता में नागरिक सेवा में भर्ती किये गये युवकों को प्रशिक्षित करने के लिए फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की ।

Note:

- सहायक संधि को स्वीकार करने वाला पहला शासक अवध का नवाब (1765)
- वेलेजली की सहायक संधि को स्वीकार करने वाला प्रथम शासक - हैदराबाद निजाम (1798)

- लॉर्ड नार्थब्रुक ने यह घोषणा की –मेरा उद्देश्य करों को हटाना तथा अनावश्यक वैधानिक करवाईयों को बन्द करना है ।
- इसी के समय स्वेज नहर खुल जाने से भारत एवं ब्रिटेन के बीच व्यापार में वृद्धि हुई ।

लॉर्ड लिटन (1876-1880)

- **1876** ई. का शाही उपाधि अधिनियम ।
- जनवरी 1877 ई. में दिल्ली दरबार का आयोजन जिसमें रानी विक्टोरिया को भारत की महारानी (केसर-ए-हिन्द)की उपाधि प्रदान करना।
- 1878 ई. का वर्नाक्युलर प्रेस विधेयक एवं आर्म्स विधेयक।
- द्वितीय अफ़गान युद्ध 1878-80 सर रिचर्ड स्ट्रेची के अधीन 1878 ई. में प्रथम अकाल आयोग की नियुक्ति ।
- मोहम्मदन एंग्लो ओरिएंटल कॉलेज की नींव अलीगढ़ में 1877 में लॉर्ड लिटन के द्वारा रखी गई थी।
- वैधानिक सिविल सेवा परीक्षा (1879) जो इंग्लैण्ड में आयोजित उसमें उम्मीदवारों के लिए अधिकतम उम्र सीमा 21 से 19 कर दी गई।

लॉर्ड रिपन (1880 – 1884)

- लॉर्ड रिपन के समय 1881 ई. प्रथम फैक्ट्री विधेयक पारित हुआ ।
- लॉर्ड रिपन के समय 1881 ई. में भारत की प्रथम नियमित जनगणना 254 मिलियन ।
- 1882 ई. में स्थानीय स्वशासन की शुरुआत
- वर्नाक्यूलर प्रेस विधेयक 1882 ई. में रद्द ।
- केन्द्रीय वित्त का 1882 ई. में विभाजन।
- सर विलियम हंटर के अधीन शिक्षक आयोग का 1882 ई. में गठन।
- 1863 ई. में अकाल संहिता।
- इल्बर्ट बिल विवाद – 1883 ई. में यूरोपियों के खिलाफ मामलों की सुनवाई करने के लिए भारतीय न्यायाधीशों पर लगाई गई अयोग्यताओ को हटाया जाना ।
- सिविल सेवा के लिए प्रवेश की अधिकतम उम्र बढ़ाकर 21 वर्ष कर दी गई ।

लॉर्ड डफरिन (1884 -1888):-

- तृतीय बर्मा युद्ध (1885-88)।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के समय लॉर्ड क्रास राज्य सचिव थे
- इसी के शासनकाल में 28 दिसम्बर 1885 ई. को भारतीय राष्टीय कांग्रेस की स्थापना ए. ओ. ह्यूम ने की ।

लॉर्ड लैन्सडाउन (1888-1894):-

- 1891 ई. का दूसरा फैक्टरी विधेयक पारित हुआ।
- सिविल सेवा का साम्राज्यीय, प्रांतीय एवं अधीनस्थ तीन भागों में विभाजन ।
- 1892 ई. का भारतीय परिषद् विधेयक।
- डूरण्ड कमीशन की नियुक्ति एवं इसके द्वारा ब्रिटिश भारत एवं अफगानिस्तान के बीच डूरण्ड रेखा सुनिश्चित करना।

लॉर्ड एल्गिन द्वितीय (1894-1899)

- पूना के चापेकर भाईयों द्वारा 1897 ई. में दो ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या।
- 1896 में बंबई में प्लेग।
- बीकानेर और हिसार जिलें में गंभीर सूखे।
- 'भारत को तलवार के बाल पर विजित किया गया है और तलवार के बाल पर ही इसकी रक्षा की जाएगी" यह कथन लॉर्ड एल्गिन द्वितीय का है ।

लॉर्ड कर्जन (1899-1905):-

- सर थॉमस के अधीन 1902 ई. में विश्वविद्यालयों में आवश्यक सुधारों हेतु सुझाव देने लिए एक्ट आयोग का गठन किया गया, इसकी सिफारिशों के आधार पर 1904 ई. में भारतीय विश्वविद्यालय विधेयक पास किया गया।
- 1904 ई .का प्राचीन स्मारक संरक्षण विधेयक ।
- 1904 ई. में कर्नल यंग हसबैण्ड का तिब्बत अभियान
- दिल्ली के पूसा में कृषि अनुसंधान संस्थान की स्थापना।
- कर्जन के समय में 1905 ई. में बंगाल का विभाजन हुआ ।
- कर्जन ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की स्थापना।
- कर्जन ने 1901 में कृषि इंस्पेक्टर जनरल की नियुक्ति की ।
- 1904 में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम पास किया गया ।

- भारत के तटीय मैदान लगभग 6000 km. की दूरी में स्थित हैं इनका निर्माण नदियों के द्वारा किया गया हैं।
- पूर्वी तटीय मैदान पश्चिमी तटीय मैदान की अपेक्षा अधिक चौड़ा होता है।
- पूर्वी घाट का अधिक चौड़ा होने का कारण नदियों के द्वारा डेल्टा का निर्माण करना है।
- अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ ज्वारनदमुख का निर्माण करती हैं।
- मालाबार तट पर लैंगून झील पाए जाते हैं जिन्हें कयाल कहते हैं।
- पूर्वी तटीय मैदान कृषि की दृष्टि से अधिक विकसित हैं।
- तटीय मैदान को 2 भागो में विभाजित किया जा सकता है।
- पश्चिमी तटीय मैदान
- पूर्वी तटीय मैदान
  - पश्चिमी तटीय मैदान में शामिल मैदान है
    (a) गुजरात का तटीय मैदान
    (b)कोंकण का तटीय मैदान
    (c)कर्नाटक का तटीय मैदान
    (d) मालाबार का तटीय मैदान

I. पूर्वी तटीय मैदान में शामिल मैदान है
a. उत्कल (ओड़िशा) का तटीय मैदान
b. आंध्र का तटीय मैदान
c. तमिलनाडु का तटीय मैदान
d. पश्चिमी तटीय मैदान

अध्याय – 3

भारत की नदियाँ एवं झीलें

- **नदियाँ**

भारतीय अपवाह तंत्र

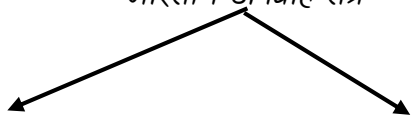

अरब सागरीय अपवाह तंत्र का

बंगाल की खाड़ी अपवाह तंत्र

अपवाह तंत्र किसी नदी एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा अपवाहित क्षेत्र को कहते हैं।

- कुल अपवाह क्षेत्र का लगभग 77 प्रतिशत भाग, जिसमें गंगा, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा आदि नदियाँ शामिल हैं। बंगाल की खाड़ी में जल विसर्जित करती हैं,
- जबकि 23% भाग जिसमें सिन्धु, नर्मदा, तापी, माही व पेरियार नदियाँ शामिल हैं। अपना जल अरब सागर में गिराती हैं।

हिमालयी अपवाह तंत्र

- उत्तरी भारत की नदियाँ अपरदन से प्राप्त मिट्टी को बहाकर ले जाती हैं तथा मैदानी भागों में जल प्रवाह की गति मंद पड़ने पर मैदानों और समुद्रों में जमा कर देती हैं।
- इन्ही नदियों द्वारा लायी गई मिट्टी से उत्तर भारत के विशाल मैदान का निर्माण हुआ हैं।
- इंड्रो ब्रह्म नदी:- भू-वैज्ञानिक मानते हैं, कि मायोसीन कल्प में लगभग 2.4 करोड़ से 50 लाखों वर्ष पहले एक विशाल नदी थी। जिसे शिवालिक या इंड्रो - ब्रह्म नदी कहा गया हैं।
- इंडो ब्रह्म नदी के तीन मुख्य अपवाह तंत्र -
- I. पश्चिम में सिन्धु और इसकी पाँच सहायक नदियाँ
- 2.मध्य में गंगा और हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ
- 3.पूर्व में ब्रह्मपुत्र का भाग व हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ

भारतीय नदी प्रणाली

I. सिन्धु नदी तंत्र

- सिन्धु जल संधि 1960 में हुई थी।

- तीन पूर्वी नदियों - व्यास, रावी, सतलज का नियंत्रण भारत के पास है। तथा 3 पश्चिमी नदियों सिन्धु, झेलम, चेनाब का नियंत्रण पाकिस्तान को दिया गया है।

1. व्यास, रावी, सतलुज — 80% पानी भारत, 20% पानी पाकिस्तान

2. सिन्धु, झेलम, चिनाब — 80% पानी पाकिस्तान, 20% पानी भारत

सिन्धु नदी तंत्र

- सिन्धु नदी का क्षेत्रफल 11 लाख, 65 हजार वर्ग km है।
- भारत में सिन्धु नदी का क्षेत्रफल 3,21,289 वर्ग किमी है।
- सिन्धु नदी की कुल लम्बाई 2,880 किमी. है।
- भारत में सिन्धु नदी की लम्बाई केवल 1,114 km है।
- भारत में यह हिमालय की नदियों में सबसे पश्चिमी नदी है।
- सिन्धु नदी का उद्गम तिब्बती क्षेत्र में स्थित कैलाश पर्वत श्रेणी (मानसरोवर झील) में बोखर-चू के निकट एक चेमयांगडुंग ग्लेशियर (हिमनद) से होता है, जो 4,164 मीटर उँचाई पर स्थित है। तिब्बत में इसे शेर मुख कहते हैं।
- **सतलुज, व्यास, रावी, चिनाब और झेलम सिन्धु नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ हैं।**
- अन्य सहायक नदियाँ – जास्कर, स्यांग, शिगार, गिलगिट, श्योक, हुंजा, कुर्रम, नुबरा, गास्टिंग व द्रास, गोमल।
- सिन्धु नदी, कराची (पाकिस्तान) के निकट अरब सागर में जाकर गिरती है।
- यह नदी अटक (पंजाब प्रांत, पाकिस्तान) के निकट पहाड़ियों से बाहर निकलती है। जहाँ दाहिने तट पर काबुल नदी इसमें मिलती है।
- यह नदी दक्षिण की ओर बहती हुई मिठनकोट के निकट पंचनद का जल प्राप्त करती है।
- पंचनद नाम पंजाब की पाँच मुख्य नदियों सतलज, व्यास, रावी, चिनाब, झेलम को संयुक्त रूप से दिया गया है।
- सिन्धु और ब्रह्मपुत्र नदियों का उद्गम स्थल तिब्बत का पठार हैं।
- तिब्बत के पठार से निकलने वाली अन्य नदियाँ - यांग्त्सी - क्यांग, जियांग, ह्वांगहो (पीली नदी, पीत), इरावदी, मेकांग एवं सतलज।
- जास्कर नदी का उद्गम हिमाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर की सीमा पर सरचू के उच्च अक्षांशीय पठारी भाग से होता है।
- यह नदी जास्कर श्रेणी में गहरे गॉर्ज का निर्माण करती है। तथा कठोर चट्टानी भागो से होकर बहती हैं।
- यह पहले उत्तर फिर पूर्व की ओर बहते हुए नेमू के निकट सिन्धु नदी से मिल जाती हैं।

सतलज नदी -

- यह एक पूर्ववर्ती नदी हैं।
- यह तिब्बत में 4,555 मीटर की ऊँचाई पर मानसरोवर झील के निकट राक्षस ताल झील से निकलती हैं।
- वहाँ इसे लाँगचेन खंबाब के नाम से जाना जाता हैं।
- सतलज नदी का संगम स्थल कपूरथला के द.-प. सिरे पर व्यास नदी में तथा मिठानकोट के निकट सिन्धु नदी में है।
- यह उत्तर - पश्चिम दिशा में बहते हुए इंडो - तिब्बत सीमा के समीप शिपकी ला दर्रे के पास भारत में प्रवेश करने से पहले लगभग 400 km तक सिन्धु नदी के समान्तर बहती है।
- सतलज नदी की सहायक नदियाँ है –सिप्ती, वास्पा, व्यास
- यह हिमालय की श्रेणियों (महान हिमालय और जास्कर श्रेणी) को काटकर महाखड्ड का निर्माण करती हैं।
- सतलुज, सिन्धु नदी की महत्त्वपूर्ण सहायक नदी हैं। यह भाखड़ा नांगल परियोजना के नहर तंत्र का पोषण करती है तथा आगे जाकर व्यास नदी में मिल जाती हैं।

व्यास नदी (विपाशा नदी) :-

- यह सिन्धु की एक अन्य महत्त्वपूर्ण सहायक नदी हैं।
- यह रोहतांग दर्रे के निकट व्यास कुंड से निकलती हैं।
- यह नदी कुल्लू घाटी से गुजरती है।

- पश्चिमी घाट बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियों व अरब सागर में गिरने वाली नदियों के बीच जल विभाजक का कार्य करती है।
- प्रायद्वीपीय भारत की नदियों की प्रौढ़वस्था व नदी घाटियों का चौड़ा व उथला होना इसके प्राचीन होने का प्रमाण है।
- प्रायद्वीपीय नदियाँ पश्चिम से पूर्व दिशा में बहती है।
- नर्मदा एवं ताप्ती इनके विपरीत बहती है।
- हिमालय के उत्थान के साथ नर्मदा व ताप्ती नदियों का भ्रंश घाटियों का निर्माण हुआ है।

प्रायद्वीपीय भारत की प्रमुख नदियाँ

1. महानदी
2. गोदावरी
3. कृष्णा
4. कावेरी
5. नर्मदा
6. ताप्ती

बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ

महानदी –

- इसकी कुल लम्बाई लगभग 851 किलोमीटर है
- यह छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले में सिहावा के पास से निकलती है।
- ओड़िशा में बहते हुए बंगाल की खाड़ी मे गिरती है
- महानदी की द्रोणी का अपवाह महाराष्ट्र छत्तीसगढ़, ओडिशा, झारखण्ड मध्यप्रदेश व महाराष्ट्र में है।
- शिवनाथ मांड और ईब बाएँ तट से तथा केन दाएँ तट से मिलने वाली महानदी की प्रमुख सहायक नदी है।

गोदावरी नदी –

- यह प्रायद्वीपीय भारत की सबसे लम्बी नदी (1465 किलोमीटर) है
- इसका अपवाह तंत्र प्रायद्वीपीय नदियों की तुलना में सबसे बड़ा है।
- गोदावरी नदी नासिक महाराष्ट्र से निकलती है।
- तेलंगाना व आंध्र मे बहते हुए राजमुंदरी के पास कई धाराओं में विभक्त होकर डेल्टा का निर्माण करती है।
- इसे दक्षिण गंगा तथा वृद्ध गंगा के नाम से जाना जाता है।
- इसकी द्रोणी का अपवाह महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, तेलंगाना, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश व मध्यप्रदेश में है
- इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ है पूर्णा पेनगंगा, वेनंगगा, इन्द्रावती (बाएँ तट से) मंजिरा (दक्षिण तट से) उड़ीसा से निकलती है व बस्तर के पठार (छत्तीसगढ़) मे बहते हुए गोदावरी से मिलती है।

- **दामोदर नदी** -दामोदर नदी झारखण्ड में स्थित छोटा नागपुर पठार से निकलती है तथा भ्रंश घाटी में बहते हुए पश्चिम बंगाल में बहने वाली हुगली नदी से मिलती है। बराकर दामोदर नदी की एक प्रमुख सहायक नदी है। इससे बंगाल का शोक भी कहते हैं।

- **स्वर्ण रेखा नदी** – यह रांची (झारखण्ड) के दक्षिण पश्चिम से निकलती है तथा झारखंड, पश्चिम बंगाल व उड़ीसा में बहते हुए यह अपना जल बंगाल की खाड़ी मे गिराती है। जमशेदपुर नगर इसी नदी के किनारे बसा हुआ है।
- **वैतरणी नदी**-यह उड़ीसा के क्योंझर जिले से गुप्तगंगा पहाड़ियों से निकलती है तथा बंगाल की खाड़ी में जल गिराती है।
- **ब्राहमणी नदी** -यह रांची के पास कोयल व शंख दो नदियों के निकलने के बाद राउरकेला में मिलने से ब्राह्मणी नदी कहलाती है।

कृष्णा नदी-

- यह प्रायद्वीपीय भारत की दूसरी सबसे लम्बी नदी (1401 km) है।
- यह सह्याद्रि (महाराष्ट्र) में महाबलेश्वर चोटी से से निकलती है।
- कर्नाटक, तेलगाना व आन्ध्र प्रदेश में बहते हुए बंगाल की खाड़ी मे गिरती है यह भी डेल्टा का निर्माण करती है (विजयवाड़ा के निकट)
- इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ है कोयना, पचगंगा, घाटप्रभा, मालप्रभा, दूधगंगा, मूसीभीमा व तुगभद्रा (तुंगा + भद्रा)

पेन्नार नदी - यह कर्नाटक के नंदी दुर्ग पहाड़ी से निकलती है तथा आंध्र प्रदेश में बहते हुए बंगाल की खाडी में गिरती है।

कावेरी नदी – यह कर्नाटक राज्य के कोडागु जिलें की ब्रह्मगिरी की पहाड़ियों से निकलती है।

- तमिलनाडु में बहते हुए बंगाल की खाड़ी में अपना जल गिराती है यह डेल्टा का निर्माण करती है।

सकेगा

- उपराष्ट्रपति के निर्वाचन से संबंधित विवादों का निपटारा भी राष्ट्रपति की तरह उच्चतम न्यायालय द्वारा किया जाता है।
- उपराष्ट्रपति को राष्ट्रपति के रूप में कार्य करने की अवधि अधिकतम 6 महीने की होती है।
- भारत का राष्ट्रपति अपना त्यागपत्र उपराष्ट्रपति को देता है।
- **art-68** उपराष्ट्रपति के पदमुक्त होने तथा पुन : उपराष्ट्रपति के चुनाव / निर्वाचन से संबंधित है।
- उपराष्ट्रपति को राज्यसभा के प्रभावी बहुमत से पारित और लोकसभा के साधरण बहुमत से अनुमोदित प्रस्ताव के द्वारा पदमुक्त किया जायेगा।
- उपराष्ट्रपति बनने से पहले डॉ. एस. राधाकृष्णन सोवियत संघ में राजदूत थे।
- राज्य सभा का सभापति उपराष्ट्रपति होता है।
- उपराष्ट्रपति का वेतन भारत भारत की संचित निधि पर भारित होता है।

भारत के उप राष्ट्रपति		
क्र.स.	**नाम**	**कार्यकाल**
1.	डॉ. एस. राधाकृष्णन	1952–1962
2.	डॉ. जाकिर हुसैन	1962-1967
3.	वी. वी. गिरि	1967-1969
4.	गोपाल स्वरूप पाठक	1969-1974
5.	बी. डी. जत्ती	1974-1979
6.	न्यायमूर्ति मो.हिदायतुल्ला	1979-1984
7.	आर. वेंकटरमण	1984-1987
8.	डॉ. शंकर दयाल शर्मा	1987- 1992
9.	के. आर. नारायण	1992- 1997
10.	कृष्णकांत	1997- 2002
11.	भैरो सिंह शेखावत	2002-10.08.2007
12.	हामिद अंसारी	11.08.2007-11.08.2017
13.	एम. वेंकैया नायडू	11.08.2017--**10 अगस्त 2022**
14.	जगदीप धनखड़	11.08.2022 से .....

अध्याय – II

प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद्

संविधान द्वारा प्रदत्त सरकार की संसदीय प्रणाली में, राष्ट्रपति, नाममात्र कार्यपालिका प्रधान की जबकि **प्रधानमंत्री वास्तविक राजप्रमुख की भूमिका में होता है।** इसका तात्पर्य यह है कि **राष्ट्रपति राज्य का प्रमुख होता है। जबकि प्रधानमंत्री सरकार का प्रमुख होता है। प्रधानमंत्री नीति आयोग, राष्ट्रीय एकता परिषद् और अंतर्राज्यीय परिषद् का पदेन अध्यक्ष होता है।** परम्परागत रूप से, कुछ विशिष्ट मंत्रालयों/विभागों जिन्हें प्रधानमंत्री किसी अन्य को आवंटित नहीं करते हैं, उन विभागों की जिम्मेदारी स्वयं प्रधानमंत्री पर होती है।

सामान्यतया प्रधानमंत्री निम्नलिखित विभागों की जिम्मेदारी लेता है:

मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति

कार्मिक लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय

परमाणु ऊर्जा विभाग तथा

अंतरिक्ष विभाग आदि।

प्रधानमंत्री की नियुक्ति

संविधान द्वारा प्रधानमंत्री की नियुक्ति के लिए कोई विशेष प्रक्रिया सुनिश्चित नहीं की गई है। **अनुच्छेद 75 के अनुसार, केवल इस बात का प्रावधान किया गया है कि प्रधानमंत्री की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाएगी।** हालाँकि, राष्ट्रपति प्रधानमंत्री के रूप में किसी को भी नियुक्त करने के लिए स्वतंत्र नहीं है। सरकार की संसदीय प्रणाली की परंपराओं के अनुसार **राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री के रूप में लोकसभा में बहुमत दल के नेता को नियुक्त करने के लिए स्वतंत्र है।**

लेकिन, जब किसी भी दल को लोकसभा में स्पष्ट बहुमत प्राप्त न हो तो राष्ट्रपति अपने व्यक्तिगत विवेक के आधार पर प्रधानमंत्री का चयन और उसकी नियुक्ति कर सकता है। ऐसी स्थिति में सामान्यतः वह सबसे बड़ी पार्टी के नेता या लोकसभा में सबसे बड़े गठबंधन के नेता को प्रधानमंत्री के रूप में नियुक्त करता है और उसे

एक निश्चित समय सीमा के अंदर सदन में विश्वास मत हासिल करने के लिए कहता हैं।

प्रधानमंत्री की शक्तियाँ और कार्य

प्रधानमंत्री की शक्तियों और कार्यों का अध्ययन निम्नलिखित शीर्षकों के तहत किया जा सकता हैं:

1. मंत्रिपरिषद् के संबंध में

प्रधानमंत्री द्वारा जिन व्यक्तियों की सिफारिश् की जाती हैं, राष्ट्रपति (सिर्फ) उन्हीं को मंत्री के रूप में नियुक्त करता हैं।

प्रधानमंत्री अपनी इच्छानुसार मंत्रियो को उनके विभाग आवंटित करता हैं और उनमें बदलाव भी कर सकता हैं।

यदि प्रधानमंत्री और उसके किसी अधीनस्थ मंत्री के मध्य किसी मुद्दे पर मतभेद उत्पन्न होता हैं तो वह उस मंत्री को इस्तीफा देने के लिए कह सकता हैं या राष्ट्रपति को उसे बर्खास्त करने के लिए कह सकता हैं।

प्रधानमंत्री, मंत्रिपरिषद् की बैठक की अध्यक्षता करता हैं और बैठक के निर्णय को विशेष रूप से प्रभावित भी करता हैं।

वह सभी मंत्रियों का मार्गदर्शन, निर्देशन एवं नियंत्रण करता हैं और उनकी गतिविधियों में समन्वय स्थापित करता हैं।

प्रधानमंत्री अपने पद से त्यागपत्र देकर मंत्रिपरिषद् को समाप्त कर सकता हैं।

2. राष्ट्रपति के संबंध में

प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति और मंत्रिपरिषद् के मध्य संचार का प्रमुख माध्यम होता हैं। वह राष्ट्रपति को संघ के प्रशासनिक मामलों और विधायी प्रस्तावाना से संबंधित मंत्रिपरिषद् के सभी निर्णयों के बारे में सूचित करता हैं।

वह राष्ट्रपति की इच्छानुसार, संघ के प्रशासनिक मामलों और विधायी प्रस्तावों को उसके समक्ष प्रस्तुत करता हैं। यदि राष्ट्रपति आवश्यक समझे तो किसी ऐसे मामले, जिस पर किसी मंत्री द्वारा निर्णय ले लिया गया हो लेकिन मंत्रिपरिषद् द्वारा उस पर विचार नहीं किया गया हो, के संबंध में प्रधानमंत्री उसे रिपोर्ट प्रस्तुत करता हैं।

प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति को महत्त्वपूर्ण अधिकारियों जैसे: महान्यायवादी, नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष, निर्वाचन आयुक्तों, वित्त आयोग के अध्यक्ष और सदस्यों की नियुक्ति में सलाह देता हैं।

3. संसद् के संबंध में-

प्रधानमंत्री निचले सदन अर्थात् लोकसभा का नेता होता हैं। वह राष्ट्रपति को संसद् के सत्र को बुलाने की सलाह देता हैं।

वह राष्ट्रपति को किसी भी समय लोकसभा को भंग करने के लिए कह सकता हैं।

वह सदन में सरकार की नीतियों की घोषणा करता हैं।

अन्य शक्तियाँ और कार्य

प्रधानमंत्री नीति आयोग, राष्ट्रीय एकता परिषद्, अंतर्राज्यीय परिषद् और राष्ट्रीय जल संसाधन परिषद् का अध्यक्ष होता हैं।

वह देश की विदेश नीति को आकार देने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं।

वह केंद्र सरकार का मुख्य प्रवक्ता होता हैं।

वह आपात स्थिति के दौरान राजनीतिक स्तर पर मुख्य प्रबंधक होता हैं।

राष्ट्र के नेता के रूप में वह अलग-अलग राज्यों के विभिन्न वर्गों के लोगो से मिलता हैं और उनकी समस्याओं के बारे में उनसे ज्ञापन प्राप्त करता हैं। वह सत्ता में स्थापित दल का नेता होता हैं।

वह प्रशासनिक सेवाओं का राजनीतिक प्रमुख होता हैं।

प्रधानमंत्री का राज्यसभा का सदस्य होना

संविधान प्रधानमंत्री को राज्यसभा का सदस्य होने से निषेध नहीं करता हैं। हालाँकि, संसदीय लोकतंत्र की मांग के अनुसार प्रधानमंत्री को लोकसभा, जो प्रत्यक्षतः जनता द्वारा चुनी जाती हैं, की सदस्यता प्राप्त कर सर्वोत्कृष्ट परपंराओं का निर्वहन करना चाहिए।

ऐसा इसलिए क्योंकि राज्यसभा में सदय अप्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित होते हैं। यहाँ यह तर्क भी दिया जाता हैं कि संघ के प्रधानमंत्री को लोकसभा के निर्वाचित सदस्य के रूप में होना चाहिए।

उदाहरण के लिए, ब्रिटेन में प्रधानमंत्री का हाउस ऑफ कॉमंस का सदस्य होना अनिवार्य कर दिया

में प्रतिभूतियाँ बैंका एवम् अन्य वित्तिय संबंधान दोनों को ही बेचीं जा सकती हैं।

- नगद आरक्षित अनुपात (Cash reserve ratio) और खुला बाजार कार्यवाई (open market operations) मोद्रिक नीति (monetary policy) के साधन हैं।

- **Bank Rate-** यह वह ब्याज दर है जिस पर RBI बैंकों को लम्बी अवधि का ऋण प्रदान करती थी वर्तमान में इसकी दर 6.75% हैं

- **Repo Rate** का नियमन RBI के द्वारा किया जाता है।
  यह वह ब्याज दर है जिसपर RBI बैंकों को कम अवधि का ऋण प्रदान करती हैं वर्तमान में यह ब्याज दर 6.25% हैं
- **Reverse Repo Rate यह** वह बैंक दर है जिस पर बैंक ,रिजर्व बैंक को उधार देते है
  वर्तमान में Reverse Repo दर 5.75% हैं यह Rapo दर से 0.5% कम रहती हैं।

Marginal standing facility (MSF)

यह सुविधा RBI ने 9 May 2011 को प्रारम्भ की थी यह सुविधा मात्र वाणिज्यिक बैंक की ली यह सहकारी बैंकों एवम् क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को प्राप्त नहीं हैं इसके अर्न्तगत बैंक RBI से एक दिन के लिए अर्थात् 24 घण्टों के लिए ऋण प्राप्त कर सकती हैं ब्याज की दर Rapo दर से 0.5% ज्यादा होगी जो कि वर्तमान में 6.75% हैं।

- 1982 में कृषि एवम् ग्रामीण विकास के उद्देश्य से ऋण प्रदान करने के लिए NABARD की स्थापना (शिवरमन समिति की अनुशंसा पर)
- नाबार्ड(NABARD) बैंक का मुख्यालय मुंबई में स्थित हैं।
- **NABARD**: National Bank for Agriculture and Rural Development. (NABARD वाणिज्यिक बैंकों से ऋण ले भी सकते हैं राज्य सरकार को भी दे सकती हैं)
  NABARD की स्थापना भारत सरकार और RBI ने 50-50% के योगदान से कुल 100 रु के पूंजी निवेश से की। वर्तमान में भारत सरकार के पास 99% हिस्सेदारी हैं।

अध्याय – 3

वस्तु एवं सेवा कर

GOODS & SERVICES TAX

वस्तु एवं सेवा कर GOODS & SERVICE TAX [GST]

GST की नीव आज से 16 वर्ष पहले रखी गयी थी, इसके बाद वर्ष 2007 में तत्कालीन भारत सरकार ने 2010 से GST लागू करने का प्रस्ताव रखा था तथा' मार्च 2011 में लोकसभा में इसे पेश किया गया।

दिसम्बर 2014 में एक बार फिर से GST विधेयक संसद में पेश किया गया तथा मई 2015 में इसे लोकसभा में पारित किया गया। राज्यसभा में मंजूरी मिलने के बाद यह संविधान का 122 वां संशोधन कहलाया। पूरे भारत देश में इसको। जुलाई 2017 से लागू किया जा रहा हैं।

25 साल पहले अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के बाद GST के रूप में अप्रत्यक्ष करों में क्रांतिकारी सुधार होने जा रहा हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था को और मजबूत बनाने में GST मील का पत्थर साबित होगा।

क्या हैं GST:

GST अर्थात वस्तु एवं सेवा कर (Goods & Service Tax) एक अप्रत्यक्ष (Indirect) कर (Tax) हैं। यह एक एकीकृत कर (Integrated Tax) है जो वस्तुओं एवं सेवाओं दोनों पर लगेगा। GST लागू होने के बाद पूरा देश एकीकृत बाजार में तब्दील हो जायेगा और अधिकतर अप्रत्यक्ष कर जैसे केन्द्रीय उत्पाद शुल्क (Central Excise Duty), सेवा कर (Service Tax)वैट VAT (Value Added Tax), मनोरंजन कर आदि सभी अप्रत्यक्ष कर समाप्त होकर GST में समाहित हो जायेंगे।

इसके बाद भारत एक सिंगल टैक्स वाली अर्थव्यवस्था बन जायेगा अर्थात देश में वस्तुओं और सेवाओं पर लगने वाले अलग-अलग टैक्स खत्म हो जायेंगे।और फिर नये आंकड़े के अनुसार देश के सभी लोग सेवाओं एवं वस्तुओं पर केवल एक ही Tax देंगे जिसे GST के नाम से जाना जायेगा।

दुनिया के करीब 165 देशो में GST लागू है न्यूजीलैंड में 15% ऑस्ट्रेलिया में 10% फ्रान्स में 19.6% जर्मनी में 19%तथा पाकिस्तान में 18%की दर सेGST लागू है |

GST से पहले भारत के Tax System में सबसे बड़ा सुधार वर्ष 2005 में किया गया था | तब Tax को VAT अर्थात् मूल्य निर्धारित कर जो कि एक बाजार कर होता है,में बदल दिया गया था। इसकी मदद से अलग-अलग चरणों में लगने वाले करों को कम करने की कोशिश की गयी थी लेकिन VAT भी "टैक्स पर टैक्स" लगने वाली व्यवस्था का अंत नहीं कर पाया | VAT उन वस्तुओं पर भी लगता है जिनके लिये Excise Duty चूका दी गयी हो यानि लोगो को Tax पर भी अलग से Tax देना पड़ता था|

भारत में Tax की वर्तमान व्यवस्था के अनुसार देश में निर्मित होने वाली वस्तुओं की मैन्युफैकचुरिंग (Manu Facturing) पर Excise Duty देनी पड़ती है और जब ये वस्तुएं बिक्री पर लायी जाती है तो इस पर Sales Tax और Vat (VAT) अतिरिक्त लग जाता है |

इसी तरह उपलब्ध करायी गयी सेवाओं पर लोगों से Service Tax वसूला जाता है लेकिन GST लागू होने के बाद इन करों का बोझ समाप्त हो जायेगा।

GST के प्रकारः

केंद्र वसूलेगा (CGST)
राज्य वसूलेगा (SGST)
एक साथ दोनों वसूलेंगे (IGST)

संघीय ढांचे को बनाये रखने के लिये GST तीन स्तरों पर लगेगा। :-

केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर (CGST)- इस कर को केन्द्र सरकार वसूलेगी।

राज्यवस्तु एवं सेवा कर (SGST)- इस कर को राज्य सरकारे वसूलेगी।

एकीकृत वस्तु एवं सेवा कर (IGST) - एक राज्य से दूसरे राज्य में वस्तुओं और सेवाओं की बिक्री की स्थिति में यह कर लगेगा।

IGSTका एक हिस्सा केंद्र सरकार और दूसरा हिस्सा वस्तु या सेवा का उपभोग करने वाले राज्य को प्राप्त होगा।

क्यों आवश्यक है GST

भारत का वर्तमान कर ढांचा (Tax Structure) बहुत ही जटिल है। भारतीय संविधान के अनुसार मुख्य रुप से वस्तुओं की बिक्री पर कर लगाने का अधिकार राज्य सरकार तया वस्तुओं के उत्पादन व सेवाओं पर कर लगाने का अधिकार केन्द्र सरकार के अधीन है।

इस कारण देश में अलग-अलग प्रकार के कर लागू है जिससे देश की वर्तमान कर व्यवस्था बहुत ही जटिल हो गयी है । कंपनियो व छोटे उद्योगों के लिये इन विभिन्न प्रकार के कर कानूनों का पालन करना मुश्किल हो जाता है। इन सभी जटिलताओं को खत्म करने के लिये ही GST को लागू किया जा रहा है।

प्रत्यक्ष कर (Direct Tax)- वह कर जिसे आपसेसीधे तौर पर वसूला जाता है प्रत्यक्ष कर कहलाता है।

उदाहरण- कृषि कर, सम्पत्ति कर, व्यवसाय कर,निगम कर आदि |

अप्रत्यक्ष कर (Indirect Tax) – जिसका मौद्रिक भार दूसरों पर डाला जाये अर्थात वास्तविक भार उस व्यक्ति को नहीं देना पड़ता जो उस अदा करता है |

उदाहरण – Excise Tax (उत्पापन कर), सीमा शुल्क(Custom Tax) सेवाकर (Service Tax),VAT (बाजार कर) आदि|

उदाहरण- माना कोई वस्तु 100 रुपये में तैयार हुयी है और उस वस्तु पर Tax लगा 12%जिससे उस वस्तु की कीमत होगयी 112 रुपये। चूंकि उस वस्तु के निर्माण में लागत आयी 8 रुपये, तो उस वस्तु की कुल कीमत हो गयी 120 रुपये |

माना अब 120 रुपये वाली वस्तु पर 18%टैक्स लगना था लेकिन यहां पर उस वस्तु को कच्चे माल के रुप में पहले ही खरीदा जा चुका है तथा उस पर 12% टैक्स भी पहले ही लग चुका है अतः इस बात पर 18% टैक्स नही लगेगा। 18% से 12% घटाकर मात्र6% टैक्स ही लगेगा, जिससे वस्तुओं की कीमतों में पहले की अपेक्षा स्थिरता आयेगी।

यही है GSTका सबसे बड़ा फायदा जो टैक्स पर टैक्स लगाने वाली प्रथा को खत्म करेगा|

आइये अब इसको एक चार्ट के माध्यम से समझने की कोशिश करते हैं।

	वर्तमान स्थिति में वस्तु की कीमत	**GST लागू के बाद पड़ने वाला प्रभाव**
पहला चरन (निर्माता)	एक उधमी100 रुपये का कपड़ा खरीदता है। इसमें 10 रुपये का अप्रत्यक्ष कर भी शामिल है। इससे तैयार शर्ट कि लागत आयी30 रुपये। शर्ट तैयार होने पर कीमत रखी गयी 130 रुपये इस पर लगता है 10% टैक्स (कर) 130 रु. इज 10% से कुल कर हुआ 13 रुपये कुल कीमत 130+13=143रुपये	एक उधमी 100 रुपये का कपडा खरीदता है। इससे 10 रुपये का अप्रत्यक्ष कर भी शामिल है। इससे तैयार शर्ट कि लागत आती है 30 रुपये। शर्ट तैयार होने पर वह कीमत रखता है 130 रुपये। इस पर लगता है 10% कर। 130 रुपये पर 10% से कुल कर हुआ 130 रुपये। इस पर लगता है 10% कर। 130 रुपये पर 10% से कुल कर हुआ 130 रुपये। क्योंकि वह 10 रुपये का टैक्स कपड़ा खरीदते वक्त दे चुका है अतः उसे कर देना होगा 13-10=3 रुपये।
दूसरा चरण (थोक विक्रेता)	थोक विक्रेता ने इसे 143 रुपये में खरीदा 20 रुपये का मुनाफा जोड़ने पर कीमत 163 रुपये। 10% का कर लगने के बाद कीमत 16.30 रुपये कर जोड़ने का शर्ट की कुल कीमत हो गयी 179.30 रुपये।	थोक विक्रेता ने इसे 130 रुपये में खरीदा। 20रुपये का मुनाफा जोड़ने पर शर्ट की कीमत 150 रुपये। 10% का टैक्स लगने बाद कीमत 15 रुपये। निर्माता इस पर पहले ही 13 रुपये कर का भुगतान कर चुका है। अतः थोक विक्रेता को पहले छूट मिलेगी, कर के रूप में उसे अदा करना होगा 15-13=2 रुपए GST
तीसरा चरण रिटेलर (खुदरा व्यापारी)	थोक विक्रेता ने रिटेलर को शर्ट 179.30 रुपये में रिटेलर ने पैंकिंग कर के 10 रुपये का मुनाफा जोड़ा शर्ट की कीमत हो गयी 189.30 रुपये इस पर लगता है 10% का टैक्स अतः 189.30 रुपये पर देना होगा 18.9 रुपये टैक्स	थोक विक्रेता ने रिटेलर को 150 रुपये में शर्ट बेची। रिटेलर ने इसकी पैंकिंग करके 10 रुपये का मुनाफा जोड़ा, शर्ट कि कीमत हो गयी 160 रुपये। थोक विक्रेता के स्तर तक 15 रुपये का भुगतान पहले ही हो चुका है अतः रिटेलर को देने होगें 16-15= केवल 1 रुपया।
कुल कीमत	अतः शर्ट पर निर्माता, थोक विक्रेता और रिटेलर के स्तर पर लगा कुल वर्तमान करो का मूल्य, 10+13+16.3+18.9=58.23 रुपये टैक्स शर्ट की कुल कीमत होगी – 143+58.23=201.23 रुपये	अतः शर्ट पर निर्माता, थोक विक्रेता और रिटेलर के स्तर पर लगा कुल वर्तमान करों का मूल्य, 10+3+2+1= केवल 16 रुपये GST शर्ट की कीमत होगी 130+16=146 रुपये

विविध

महत्वपूर्ण दिवस	
राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दिवस 2022	
जनवरी	**तिथि**
विश्व ब्रेल दिवस	4 जनवरी
विश्व युद्ध अनाथ दिवस	6 जनवरी
प्रवासी भारतीय दिवस	09 जनवरी
राष्ट्रीय युवा दिवस	12 जनवरी
सड़क सुरक्षा सप्ताह	11- 17 जनवरी
लाल बहादुर शास्त्री पुण्य-तिथि	11 जनवरी
सेना दिवस	15 जनवरी
NDRF स्थापना दिवस	19 जनवरी
सुभाष चन्द्र का जन्मदिन	23 जनवरी
पराक्रम दिवस	23 जनवरी
राष्ट्रीय बालिका दिवस	24 जनवरी
अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा दिवस	24 जनवरी
राष्ट्रीय मतदाता दिवस	25 जनवरी
राष्ट्रीय पर्यटन दिवस	25 जनवरी
गणतंत्र दिवस - 26 जनवरी	26 जनवरी
अंतर्राष्ट्रीय प्रलय स्मृति दिवस	27 जनवरी
लाला लाजपत राय जयंती	28 जनवरी
विश्व कुष्ठ उन्मूलन दिवस	शहीद दिवस
शहीद दिवस	30 जनवरी
फरवरी	**तिथि**
भारतीय तटरक्षक दिवस	1 फरवरी
विश्व आद्रभूमि दिवस	1 फरवरी
विश्व कैंसर दिवस	4 फरवरी
अंतर्राष्ट्रीय मानव भ्रातृत्व दिवस	4 फरवरी
International day of Zero tolerance for female genital mutilation	6 फरवरी
International Epilepsy Day	8 फरवरी
सुरक्षित इंटरनेट दिवस	9 फरवरी
विश्व दाल दिवस	10 फरवरी
राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस	10 फरवरी
विज्ञान में बालिकाओं तथा महिलाओं का दिवस	11 फरवरी
विश्व यूनानी दिवस	11 फरवरी
राष्ट्रीय उत्पादकता दिवस	12 फरवरी
विश्व रेडियो दिवस	13 फरवरी
वेलेंटाइन्स डे	14 फरवरी
अंतर्राष्ट्रीय बचपन कैंसर दिवस	15 फरवरी
विश्व सामाजिक न्याय दिवस	20 फरवरी
विश्व पैंगोलिन दिवस	20 फरवरी
अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस	21 फरवरी
World thinking day	22 फरवरी
केंद्रीय उत्पाद शुल्क दिवस	24 फरवरी
संत रविदास जयंती	27 फरवरी
विश्व एनजीओ दिवस	27 फरवरी
राष्ट्रीय प्रोटीन दिवस	27 फरवरी
राष्ट्रीय विज्ञान दिवस	28 फरवरी
दुर्लभ रोग दिवस	28 फरवरी
मार्च	**तिथि**
विश्व नागरिक सुरक्षा दिवस	1 मार्च
कर्मचारी प्रशंसा दिवस	2 मार्च
विश्व श्रवण दिवस	3 मार्च

गिर्ना नदी	मालेगांव	महाराष्ट्र
महानदी	संबलपुर	ओडिशा
ब्राह्मणी	राउरकेला	ओडिशा
मुथा	पुणे	महाराष्ट्र
दमन गंगा नदी	दमन	दमन
वैंगई	मदुरै	तमिलनाडु
कावेरी	तिरुचिरापल्ली	तमिलनाडु
अड्यार	चेन्नई	तमिलनाडु
नोय्याल	कोयंबटूर	तमिलनाडु
गोदावरी	निजामाबाद	आंध्र प्रदेश
कृष्णा	सांगली	महाराष्ट्र
कृष्णा	कराड	महाराष्ट्र
गंगा	हाजीपुर	बिहार
शिप्रा	उज्जैन	मध्य प्रदेश
कावेरी	इरोड	तमिलनाडु
थमीरबाराणी	तिरुनेलवेली	तमिलनाडु
नर्मदा	भरूच	गुजरात
उल्हास	कर्जत	महाराष्ट्र
गोदावरी	नासिक	महाराष्ट्र
सावित्री	महाड	महाराष्ट्र
गोदावरी	नांदेड़	महाराष्ट्र
पेन्नार	नेल्लोर	आंध्र प्रदेश

शहरों के पुराने नाम	
नए नाम	पुराने नाम
चेन्नई	मद्रास
कोलकाता	कलकत्ता
मुम्बई	बॉम्बे
वडोदरा	बड़ौदा
कोझीकोड	कलीकट
कोचि	कोचीन
वाराणसी	बनारस
तूतुकुडी	तूतीकोरिन
कन्या कुमारी	केप कोमोरिन
कलबुरगी	गुलबर्ग
बेलागावी	बेलगाम
जमशेदपुर	सक्ची
गुरुग्राम	गुड़गांव
पलक्कड़	पालघाट
डॉ अम्बेडकर नगर	महू
कोल्लम	क्विलोन
अलुवा	अलवाए
इलाहाबाद (प्रयागराज)	प्रयाग
पेशावर	पुरुषापुर
पटना	पाटलीपुत्र
हैदराबाद	भाग्यनगर
गुवाहाटी	प्रागज्योतिशपुरा
बीदर	मुहम्मदाबाद
कलबुरगी (गुलबर्गा)	एहसनाबाद

भारत के प्रमुख जलप्रपात की सूची			
क्र.सं.	**जलप्रपात**	**नदी**	**राज्य**
1.	चूलिया जलप्रपात	चंबल नदी	राजस्थान
2.	जोग / गरसोप्पा जलप्रपात	शरावती नदी	कर्नाटक
3.	शिवसमुद्रम फॉल	कावेरी नदी	कर्नाटक

भारत के प्रमुख जलप्रपात की सूची			
क्र.सं.	जलप्रपात	नदी	राज्य
4.	गोकक जलप्रपात	घटप्रभा नदी	कर्नाटक
5.	मेकेदातू जलप्रपात	कावेरी नदी	कर्नाटक
6.	पायकरा जलप्रपात	पायकरा नदी	तमिलनाडु
7.	होगेनक्कल जलप्रपात	कावेरी नदी	तमिलनाडु
8.	वट्टपारई जलप्रपात	पड़यार नदी	तमिलनाडु
9.	बरेहीपानी जलप्रपात	बुद्धाबलंग नदी	उड़ीसा
10.	जोरंडा जलप्रपात	बुद्धाबलंग नदी	उड़ीसा
11.	दूदूमा जलप्रपात	मचकुंड नदी	उड़ीसा
12.	चित्रकूट जलप्रपात	इंद्रावती नदी	छत्तीसगढ़
13.	तीरथगढ़ जलप्रपात	मुनगाबहार नदी	छत्तीसगढ़
14.	रजरप्पा जलप्रपात	दामोदर और भैरव नदी	झारखंड
15.	हुंडरू जलप्रपात	स्वर्णरेखा नदी	झारखंड
16.	धुआंधार जलप्रपात	नर्मदा नदी	मध्य प्रदेश
17.	कपिलधारा	नर्मदा नदी	मध्य प्रदेश

भारत के प्रमुख जलप्रपात की सूची			
क्र.सं.	जलप्रपात	नदी	राज्य
18.	येन्ना जलप्रपात	कृष्णा नदी	महाराष्ट्र
19.	वज्राई जलप्रपात	उरमोदी नदी	महाराष्ट्र
20.	दूधसागर जलप्रपात	मांडवी नदी	गोवा
21.	सहस्त्रधारा जलप्रपात	कालीगढ़ नदी	उत्तराखंड
22.	एलीफेंट फॉल्स	शिलांग के पास	मेघालय
23.	नोहकलिकाई जलप्रपात	चेरापूंजी के पास	मेघालय

भारत की कुछ प्रमुख नदियां		
क्र.सं.	नदी	लंबाई (किमी)
1.	सिंधु	2,900
2.	ब्रह्मपुत्र	2,900
3.	गंगा	2,510
4.	गोदावरी	1,450
5.	नर्मदा	1,290

ध्यानचन्द पुरस्कार

- इस पुरस्कार से खेल और क्रीड़ा में अपने जीवनकाल के दौरान उपलब्धि प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों को सम्मानित किया जाता है।
- ये उन खिलाड़ियों को प्रदान किया जाता है, जो उत्कृष्ट खिलाड़ी रहे हैं तथा खेल से निवृत्ति के पश्चात् भी उसके विकास कार्यों में लगे हुए हैं।
- इस पुरस्कार का नाम हॉकी के प्रसिद्ध खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद के नाम पर रखा गया है। यह पुरस्कार प्रत्येक वर्ष खेल मंत्रालय द्वारा प्रदान किया जाता है।
- इस पुरस्कार के तहत् ₹5 लाख नकद, एक पट्टिका तथा एक प्रशस्ति -पत्र प्रदान किया जाता है।

खेल एवं खिलाड़ी	
खिलाड़ी	**खेल**
क्रिस्टियानो रोनाल्डो	फुटबॉल (पुर्तगाल)
लियोन मैसी	फुटबॉल (अर्जेन्टीना)
बाइचुंग भूटिया	फुटबॉल (भारत)
नेमार	फुटबॉल (ब्राज़ील)
डियेगो माराडोना	फुटबॉल (अर्जेन्टीना)
डेविड बेकहम	फुटबॉल (इंग्लैण्ड)
जिनेडिन जीडान	फुटबॉल (फ्रांस)
सुनील छेत्री	फुटबॉल (भारत)
पेले	फुटबॉल (ब्राजील)
काका	फुटबॉल (ब्राजील)
वेनस्नी	फुटबॉल (ब्रिटेन)
गुरप्रीत सिंह संधु	फुटबॉल
ऐलेक्सिया पुटेलास	फुटबॉल (स्पेन)
रोजर फेडरर	टेनिस (स्विट्जरलैण्ड)
सानिया मिर्जा	टेनिस
एण्डी मरे	टेनिस (ब्रिटेन)
आन्द्रे अगासी	टेनिस (U.S.A)
स्टेफी ग्राफ	टेनिस (जर्मनी)
लिएंडर पेस	टेनिस (भारत)
महेश भूपति	टेनिस (भारत)
राफेल नडाल	टेनिस (स्पेन)
नोवाक जोकोविक	टेनिस (सर्बिया)
सेरेना विलियम्स	टेनिस (U.S.A)
मारिया शारापोवा	टेनिस (रूस)
एश्ले बार्टी	टेनिस (ऑस्ट्रेलिया)
P.V. सिन्धु	बैडमिंटन
प्रकाश पादुकोण	बैडमिंटन
सानिया नेहवाल	बैडमिंटन
पुलेला गोपी चन्द	बैडमिंटन
ज्वाला गुट्टा	बैडमिंटन
सुहास यथिराज	बैडमिंटन
मनीष नरवाल	बैडमिंटन
कृष्णा नागर	बैडमिंटन
मनोज सरकार	बैडमिंटन
गीता फोगाट	कुश्ती
बजरंग पुनिया	कुश्ती
योगेश्वर दत्त	कुश्ती
रवि कुमार दहिया	कुश्ती
विनेश फोगाट	कुश्ती
बबीता फोगाट	कुश्ती
सुशील कुमार	कुश्ती
दीपक पुनिया	कुश्ती
साक्षी मलिक	कुश्ती
नवजोत कौर	कुश्ती
मैरी कॉम	मुक्केबाजी
बीजेन्द्र सिंह	मुक्केबाजी
गौरव बिधुड़ी	मुक्केबाजी
लवलीना बोरगोहेन	मुक्केबाजी
शिव थापा	मुक्केबाजी
अमित पंघाल	मुक्केबाजी
विकास कृष्ण	मुक्केबाजी
पूनम यादव	क्रिकेट
हरमनप्रीत कौर	क्रिकेट
रविन्द्र जडेजा	क्रिकेट
विराट कोहली	क्रिकेट
M.S. धोनी	क्रिकेट
सचिन तेंदुलकर	क्रिकेट
सहवाग	क्रिकेट
सौरभ गांगुली	क्रिकेट
अजय ठाकुर	कबड्डी
राहुल चौधरी	कबड्डी
जसवीर सिंह	कबड्डी
प्रदीप नरवाल	कबड्डी
राजेश नरवाल	कबड्डी
फवाद मिर्जा	घुड़सवारी

दीपा कर्माकर	जिमनास्टिक
नीरज चोपड़ा	जैवलिन थ्रो
सुमित अंतिल	जैवलिन थ्रो
देवेन्द्र झांझरिया	भाला फेंक (या जैवलिन थ्रो)
सुंदर सिंह गुर्जर	भाला फेंक (या जैवलिन थ्रो)
टाईगर वुडस	गोल्फ (U.S.A)
मिल्खा सिंह	गेल्फ
गीत सेठी	बिलियर्ड्स
पंकज आडवानी	बिलियर्ड्स (स्नूकर)
मीराबाई चानू	भारत्तोलन
जेरेमी लालरिनुंगा	भारोत्तोलन (भारत)
पूनम यादव	भारोत्तोलन
कर्णम मल्लेश्वरी	भारोत्तोलन

भाविनी बेन पटेल	टेबल टेनिस
योगेश कथूनिया	चक्का फेंक
सिंहराज अधाना	शूटिंग
अवनी लेखरा	निशानेबाजी
अभिनव बिन्द्रा	निशानेबाजी
सौरभ चौधरी	निशानेबाजी
मनु भाकर	निशानेबाजी
गगन नारंग	निशानेबाजी
हीना सिद्धू	निशानेबाजी
मरियप्पन थंगावेलू	ऊँची कूद
प्रवीण कुमार	ऊँची कूद
शरद कुमार	ऊँची कूद
निषाद कुमार	ऊँची कूद
अंजू बाबी जार्ज	लम्बी कूद
हरविंदर सिंह	तीरंदाजी

उसैन बोल्ट	एथलेटिक्स
हिमा दास	एथलेटिक्स
कार्स्टन वारहोम	एथलिटस (नार्वे)
इलैन थामसन	एथलिटस (जमैका)
तेजिंदर पाल सिंह	एथलेटिक्स
दीपा मलिक	पैरा-एथलीट
सुंदर सिंह गुर्जर	पैरा-एथलीट
मैग्नस कार्लसन	शतरंज
विश्वनाथ आनन्द	शतरंज
माइकल शूमाकर	कार रेसिंग
लुईस हेमिल्टन	कार रेसिंग (ब्रिटेन)

भारत के प्रमुख शहर एवं उपनाम

शहर का नाम	**उपनाम**
नई दिल्ली	रैलियों का शहर
पटियाला (पंजाब)	शाही शहर
अमृतसर (पंजाब)	गोल्डन सिटी
कपूरथला	बगीचों का शहर
मुंडी (मध्य प्रदेश)	पावर हब सिटी
भोपाल (मध्य प्रदेश)	झीलों का शहर
इंदौर (मध्य प्रदेश)	मिनी मुंबई
मध्य प्रदेश	सोया प्रदेश
नैनीताल (उत्तराखंड)	झीलों का शहर
मसूरी (उत्तराखंड)	पर्वतों की रानी
उज्जैन (मध्य प्रदेश)	मंदिरों का शहर
त्रिवेंद्रम (तिरुवनंतपुरम) केरल	मूर्तियों का शहर भारत का सदाबहार शहर
ईटानगर (अरुणाचल प्रदेश)	उगते सूर्य की भूमि

भिलाई (छत्तीसगढ़)	स्टील सिटी ऑफ इंडिया
दिसपुर (असम)	मंदिरों का शहर
तूतीकोरिन	पर्ल सिटी, भारत का पर्ल हार्बर
अलाप्पुझा (केरल)	पूर्व का वेनिस
वायनाड (केरल)	भगवान का बगीचा
कोझिकोड (कालीकट, केरल)	मसालों का शहर
कोच्चि या कोचीन (केरल)	केरल का प्रवेश द्वार, अरब सागर की रानी, मसालों का शहर
विशाखापत्तनम (आंध्र प्रदेश)	भाग्य का शहर
भीमावरम (आंध्र प्रदेश)	झींगें का शहर, भारत का दूसरा बारदोली
धर्मावरम (आंध्र प्रदेश)	आंध्र प्रदेश का सिल्क सिटी

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)

FREE SAMPLE

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/f3uxse

Online order - https://bit.ly/3MicWlh

Call करें - 9887809083

whatsapp-https://wa.link/f3uxse 2 web.- https://bit.ly/3MicWlh